अंक 12
नवंबर, वर्ष - 21

सभापति
डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी

सचिव
श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी
मोबा. 098711-70559

कोषाध्यक्ष
श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 09868875645

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
पूर्व संपादक

संपादक
शशांक चतुर्वेदी
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', ई-8/जी2/255
गुलमोहर कॉलोनी, भोपाल
(मध्यप्रदेश)
मोबा. 9826086879
ई- मेल :
sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

वेबसाइट : www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से मन की बात	04
संपादकीय	05
संपादक के नाम पत्र	06
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा कार्यकारिणी	09
वास्तुशास्त्र मेरी नजर में	17
'ऑन लाइन ' कवि सम्मेलन'	20
कहानी : छापा हाथ का	21
भगवान पर भरोसा...	23
कोरोना वैश्विक महामारी और हमारी भूमिका	25
कोविड में कार्डियक केअर	26
मानसिक अस्वस्थता, कोरोना काल का प्रभाव	27
प्राचीन तीर्थ : सूकर क्षेत्र- सोरों जी	29
समाज समाचार	32
शाखा समाचार	32
शोक समाचार	34

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
Account No. : 1006238340
IFSC Code : CBIN0283533
Branch : Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
सत्र + वार्षिक सदस्यता शुल्क- 101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक शशांक चतुर्वेदी

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

अपनों से मन की बात

● डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
Email : sabhapati.mahasabha@gmail.com

बंधुवर पालागन,

दीपोत्सव के सकुशल आयोजन के उपरांत त्यौहारों के मौसम की विदाई हो चुकी है। मौसम में हल्की हल्की ठंडक का भी पदार्पण हो चुका है। देश के उत्तरी हिस्सों में बर्फबारी भी आरंभ हो गई है। भगवान केदारनाथ जी के कपाट चंद महीनों के लिए बंद हो गए हैं। संपूर्ण देश में शीत ऋतु ने दस्तक दे दी है। इसी के साथ ही साथ दीपोत्सव में हमारी लापरवाही व ऋतु परिवर्तन के संक्रमण काल में कोरोना महामारी फिर अपना प्रकोप दिखाने की तैयारी में है। पूरे देश के साथ हमारा समाज भी इससे ग्रसित है। जिन लोगों ने हमारे प्रधानमंत्री जी की चेतावनी को दरकिनार करते हुए इसे विदा मान लिया था। वे लोग लापरवाही कर स्वयं, परिवार व देश को पुनः संकट में डाल रहे हैं। विवाह उत्सव का कालखंड प्रारंभ हो चुका है। सावधानी की अत्यधिक आवश्यकता अब और अधिक है। आपकी व आपके परिवार की सुरक्षा सर्वोपरि है।

सामाजिक कार्यक्रम या मांगलिक कार्यक्रमों के आयोजन में विशेष सावधानी बरतें। शासकीय निर्देशों का गंभीरता से पालन करें। आप सब की सुरक्षा के प्रति हम लोग चिंतित हैं।

हमारे परिवार में होने वाले मांगलिक कार्यक्रमों जैसे वर्षगांठ, विवाह की वर्षगांठ, जनेऊ, मुंडन, गृह प्रवेश आदि अवसरों पर समाज को आवश्यक रूप से दान देकर सहयोग करें। अनेक समाज, जिनकी उन्नति का हम उदाहरण रखते हैं। वह दान देने के अवसरों को तलाशते हैं व बढ़ चढ़कर सामाजिक सहयोग करते हैं। हमने एक योजना "गुल्लक योजना" आप सभी के सहयोग से प्रारंभ कर रहे हैं। वार्षिक रूप से समाज को एक निश्चित दिन तय कर दान करें। इस योजना को कुछ चुनिंदा शहरों से प्रारंभ कर सम्पूर्ण समाज से जोड़ने का प्रयास है। जिससे समाज हित की हम अनेक लंबित कार्यों को आगे बढ़ा सकेंगे। नई नई योजना का क्रियान्वयन हो सकेगा। यह गुल्लक आप तक शीघ्र पहुंचाई जा रही है। आर्थिक शक्ति प्राप्त कर समाज उन्नति की ओर अग्रसर होगा। समाज सशक्त होगा, तो संगठन शक्तिशाली होगा। नवगठित कार्यकारिणी के सदस्यों से आग्रह है कि सर्वप्रथम वह इस योजना में सहयोग कर समाज के सामने उदाहरण प्रस्तुत करें।

जनगणना का कार्यक्रम आप सभी के सहयोग से अपनी रफ्तार से चल रहा है। आप सभी का भरपूर सहयोग इसमें प्राप्त हो रहा है। चतुर्वेदी चंद्रिका के अंक प्राप्त ना होने की शिकायत महासभा की साइट पर जाकर की जा सकेगी। जिसका यथा शीघ्र निराकरण हमारे सहयोगियों की टीम द्वारा किया जाएगा। देश भर में चतुर्वेदी पत्रिका का वितरण केंद्रीय डाक तार विभाग के अंतर्गत है। वैसे तो चतुर्वेदी चंद्रिका की पीडीएफ फाइल भी उपलब्ध है। पत्रिका रजिस्टर डाक से अतिरिक्त शुल्क देने पर मंगवाने का प्रावधान है। कुछ शहरों में अपने सहयोगियों को इस समस्या के तुरंत निवारण हेतु प्रभार सौंपा गया है। उन्हें अतिरिक्त पुस्तकें उपलब्ध कराई गई है। इस प्रक्रिया को हम नियमित करने का प्रयास कर रहे हैं।

नवनियुक्त संपादक जी ने अपना कार्यभार संभाल लिया है। उन्हें महासभा की सामाजिक कार्यशैली के अनुभव का भी लाभ मिलेगा। मुझे विश्वास है कि सभी के सहयोग से वे इस नई जिम्मेदारी को निभाने में भी सफल होंगे। भाई कुश जी (पूर्व संपादक) का मार्गदर्शन व स्नेह उन्हें मिलता रहेगा, यह मेरा विश्वास है। मैं मुनीन्द्र भाई साहब को दूसरी पारी की सक्रिय शुरुआत की बधाई व शुभकामनाएं देता हूँ।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के 34 वे ऑनलाइन अधिवेशन 2020 को सफल बनाने हेतु आप सभी का बहुत-बहुत आभार। आपके सहयोग के बिना यह दुष्कर कार्य संभव नहीं था। इतनी बड़ी संख्या में आपका अधिवेशन में भाग लेना आपके समाज प्रेम को दर्शाता है। प्रथम अनुभव के कारण हम सभी के मन में कहीं ना कहीं शंका जरूर थी किंतु आपके प्रोत्साहन के कारण हम सफलता के प्रति आश्वस्त भी थे। संशय अवश्य था। एक बार पुनः आप सभी का बहुत-बहुत आभार।

स्व सुरक्षित रहे, स्वस्थ रहे हैं। मंगलकामनाओं के साथ !

संपादकीय

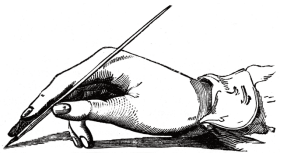

बंधुवर सादर पालागन,

विगत माह की 3 तारीख को पत्रिका वितरण के दिन बड़ा आश्चर्य मिश्रित सुखद अनुभव हुआ। मेरे अपने, मेरे व्यक्तित्व के अनुरूप मेरी संपादकीय को लेकर बहुत ही सशंकित थे। वितरण की तारीख की सुबह फोन आने, बार-बार छोटे-छोटे दिशा निर्देश उनकी मन की अनजानी आशंका को दर्शा रहे थे। लेकिन यह बड़ी संतोष की बात है, कि मैं उनकी अपेक्षाओं पर खरा उतरा व उनसे भरपूर आशीर्वाद प्राप्त किया।

सर्वप्रथम मैं हमारे पूर्व संपादक डॉ. कुश जी का सविनय आभार व्यक्त करता हूँ। जिन्होंने मुझ जैसे अदने से कार्यकर्ता के लिए इतनी सुंदर परिचयात्मक बानगी प्रस्तुत की। वह सचमुच में मेरे जीवन का सबसे भावुक व रोमांचक पल था। उनके निश्छल हृदय, सकारात्मक दृष्टिकोण, सादगीपूर्ण व्यक्तित्व व साहित्यिक परिपक्वता का मैं शुरू से प्रशंसक रहा हूँ। इस आशीर्वाद हेतु उनका बहुत-बहुत आभार। महासभा के प्रथम ऑनलाइन अधिवेशन को हमने यथासंभव कवरेज देने का प्रयास किया। ऑनलाइन अधिवेशन एक दिवसीय होने के कारण हम लोगों के पास सीमित कार्यक्रम, प्रकाशन सामग्री व समय का अभाव था। सबसे बड़ी बात हम सभी का यह प्रथम अनुभव था। जिसके कारण सभी के मन मे एक अनजाना भय व्याप्त था। सभापति डॉ. प्रदीप जी के नेतृत्व व मंत्री मुनीन्द्र जी के कुशल संचालन से कार्यक्रम निर्विघ्न रूप से निर्धारित समय के अनुसार संपन्न हुआ। विगत अंक में प्रकाशित अधिवेशन के कवरेज को भरपूर सराहना प्राप्त हुई। सभापति डॉ. प्रदीप जी के नेतृत्व में इस समूहिक प्रयास में हम सफल रहे। समाज के अनेक समाज प्रेमियों द्वारा सक्रिय प्रतिक्रिया भी हमने यथासंभव समायोजित करने का प्रयास किया। विगत अधिवेशन की कवरेज के अनुभव का हमें भरपूर लाभ मिला। अधिवेशन की कवरेज को भरपूर सराहना मिली। यह हमारी टीम के कुशल सामंजस्य का सुखद परिणाम है। जिसका मैं हम सभी की ओर से हृदय के अंतःकरण से आभारी हूँ। हमारा समाज बुद्धिजीवीयों का समाज है। समाज के अनेक विद्वानों व विदुषियों ने साहित्य के क्षेत्र में अपना परचम फहराया है। हम सदा से कलम वीर रहे है। चतुर्वेदी चंद्रिका में पाठन सामग्री हेतु गोपाल जी (लखनऊ), ऊषा जी (भोपाल), चित्रा जी (भोपाल), दिलीप जी (लखनऊ), बीना जी (जयपुर), कैलाश जी (कासगंज), सुबोध जी (ग्वालियर), नवीनजी (जबलपुर), अनिरुद्ध गोपालजी (लखनऊ), प्रीता जी (जयपुर), अग्रज व सहयोगी भरत जी (रिषड़ा) आदि सभी का सतत अमूल्य सहयोग रहा है।

मैं भविष्य में भी आपसे ऐसे ही सहयोग की आकांक्षा रखता हूँ। इनमें कुछ लेखक ऐसे हैं जो मेरे निवेदन पर पत्रिका की आवश्यकतानुसार सामयिक विषयों पर पूरे शोध व जानकारी के साथ शीघ्रता से समयबद्ध लेख लिखते थे। उनका मैं हृदय से आभारी हूँ।

पत्रिका में कुछ पेज बच्चों, युवाओं व महिलाओं, सामयिक विषयों के लिए सुरक्षित कर उनके मनोनुकूल सामग्री प्रकाशित करने का विचार है। अतः आप सभी का सहयोग अपेक्षित है। कोरोना महामारी से संबंधित कुछ लेख इस अंक में दे रहे है। चित्रा जी (भोपाल) का वास्तु पर लेख, उषा जी भोपाल व विभा जी लखनऊ की कहानियां व कैलाश जी का सोरों के ऊपर जानकारी आपको पसंद आएगी। समाज सेवा एक बहुत ही दुष्कर कार्य है अपनी आजीविका के कार्यों,जीवन की व्यस्ताओं व पारिवारिक जिम्मेदारियों में से समाज सेवा हेतु समय निकालकर सेवा करना सराहनीय कार्य है। ऐसे निस्वार्थ, समर्पित,अवैतनिक समाज सेवकों को साधुवाद। नव गठित महासभा कार्यकारिणी की सचित्र संक्षिप्त जानकारी आपके अवलोकनार्थ प्रस्तुत है।आशा है आपको हमारा यह प्रयास पसंद आएगा।

सादर पालागन।

संपादक के नाम पत्र

शशांक जी को चतुर्वेदी चंद्रिका के नए संपादक की नई जिम्मेदारी संभालने की बहुत-बहुत बधाई। शशांक जी को मैंने निष्ठा व समर्पण के साथ सेवा कार्य करते बहुत नजदीक से देखा है। ईश्वर आपको सफलता प्रदान करें।

– **विनीता चौबे,** पूर्व संपादक चतुर्वेदी चंद्रिका

युवा शब्द सदैव ही अपने आप में ऊर्जा और उत्साह का संचार करता है। युवा वो कच्ची मिट्टी है। जिसको जिस सांचे में डालो वो वही आकृति प्राप्त कर लेता है।

आज के व्यस्ततम और प्रतिस्पर्धी समय में युवाओं को समाज से जोड़े रखना बहुत ही बड़ी चुनौती है। 34 वें महासभा अधिवेशन में भी युवाओं को जोड़ने के लिए सभापति जी और अन्य बांधवों ने अपने विचार रखे व साथ ही कई क्षेत्रों में जोड़ा भी जो एक सकारात्मक पहल है। आगरा के इतिहास में दशकों से युवा चतुर्वेदी मंच का योगदान समाज को जोड़ने,समाजिक सहयोग व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में रहा है। जिसे पूरे समाज ने हमेशा ही सराहा है। इसी क्रम में कुछ अन्य स्थानों से युवा चतुर्वेदी संगठनों के समाजिक सहयोग की जानकारी भी समय समय पर प्राप्त होती रही है, जो उत्साहवर्धक है। साथ ही ये बहुत आवश्यक है कि अन्य स्थानों में भी युवा मंचों की स्थापना हों और युवाओं को प्रोत्साहित किया जाएं। जिससे समाजिक सौहार्द व चतुर्वेदी संस्कार आने वाले समय में भी धरोहर के रूप में सुरक्षित रहें। समाजिक कार्यों व संस्कारों को सुरक्षित रखने की प्रथम जिम्मेदारी अभिवावकों की है। जिन्हें प्रारम्भ से ही बच्चों से अपने सामाजिक संस्कार – इतिहास साझा करने चाहिए। सामाजिक, पारिवारिक कार्यक्रमों में उनको सहभागी जरूर बनाना चाहिए और साथ ही कार्यक्रमों में समाज के छोटे बड़े बांधवों से बच्चों का परिचय करवाना चाहिए व समाजिक प्रतिस्पर्धाओं में प्रतिभाग हेतु प्रेरित करना चाहिए।

ये छोटे छोटे प्रयास समाज में उत्पन्न हो रहीं विसंगतियों से रोकने में भी सहायक रहेंगे। महासभा के माध्यम से माथुर चतुर्वेदी समाज की संपूर्ण जनगणना का कार्य एक उत्सव के रूप में किया जा रहा है। जिसमें समाज बड़-चढ़ कर सहयोग प्रदान कर रहा है। सभी बांधव अपने अपने परिवारों व स्वजनों की जानकारी उपलब्ध कराएं। जिससे डिजिटल माध्यम से सभी माथुर चतुर्वेदी बांधव जुड़ सकें।

– **आशीष चतुर्वेदी,** आगरा

--

चतुर्वेदी चंद्रिका का नया अंक सामने है। बधाई के पात्र हैं हमारे संपादक जी जिन्होंने परिपक्वता का परिचय अपने पिछले अंक में ही दे दिया था। गर्व के साथ कह रहा हूं कि पं.राधाकृष्णजी, गिरधर शर्मा जी, कालिका प्रसाद जी,विशारद जी, दिनेश चंद्र जी, महेंद्र नाथ विमलेश जी, विनीता जी और कुश भाईसाहब जैसे विद्वजनों की परिपाटी में एक नया सितारा शशांक नाम का अपनी चमक छोड़ रहा है। वो उपरोक्त नामों से परे बिल्कुल भी नहीं है, अपितु इस सितारे की चमक – दमक दिन-प्रतिदिन और तीव्र होगी। क्योंकि आप जहां तक मुझे ज्ञात है चतुर्वेदी चंद्रिका के सबसे युवा संपादक हैं। पत्रिका के लेख सामायिक दृष्टिकोण से भी लाभदायक हैं। शब्दों का चयन, भाषा शैली, लेख और सामाजिक परिचर्चा सभी में समृद्धता हिलोरें ले रही है। कहना चाहता हूं कि हम सुनहरे कल की ओर तेजी से बढ़ रहें हैं।

– **सौरभ चतुर्वेदी,** लखनऊ

--

मंत्री महोदय, जैसा कि हम सब अवगत भी है कि देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के निर्देशानुसार पूरे देश में 25-3-2020 से पूर्णतः लाक डाउन चल रहा है। यहाँ तक कि कुछ दिन तो राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्रों का वितरण भी लाक डाउन के कारण प्रभावित रहा।

ऐसे में अपनी चंद्रिका का ई संस्करण आज इन विकट परिस्थितियों में यथा समय प्रकाशित होना सुखद आश्चर्य ही था। इन परिस्थितियों में जब कोरोना के डर से लोग घरों में कैद हैं। टीम चंद्रिका के कर्मयोगियों द्वारा समय से पत्रिका का प्रकाशन सराहनीय होने के साथ- साथ समाज के प्रति निष्ठा का भी प्रतीक है। मैं आसन्न महासभा कार्यकारिणी बैठक में इस महत्वपूर्ण कार्य हेतु सम्पादक सहित टीम चंद्रिका को धन्यवाद प्रस्ताव पारित करने का पक्षधर हूँ। कृपया मेरी इस भावना से निवर्तमान एवं वर्तमान सभापति जी को भी अवगत कराते हुए आगामी कार्यकारिणी बैठक में भी प्रस्तावित करने की कृपा करें।

–**सुबोध चंद्र चतुर्वेदी,** लखनऊ

--

पालागन, नए संपादक भाई शशांक की संपादकीय पड़ लगा कि उन्होंने गुणी जनों की संगत से प्राप्त अनुभव का पूर्ण सदुपयोग किया। उनसे सीखे हर बात को करीने से कण्ठस्थ किया है। मेरी प्रभु से कामना है कि नित नई ऊंचाईयां प्राप्त करो। ढेरों शुभकामनाएं। जय जय सियाराम

– **अंशुमान चतुर्वेदी,** जयपुर

पालागन, चंद्रिका का नवम्बर माह की चंद्रिका प्राप्त हुई, क्या बात है भाई शशांक ने अपनी सम्पादकीय की पहली सीढ़ी धमाके

के साथ चढ़ी है। ये उनके समाज और पत्रिका के साथ लम्बे समय तक जुड़े रहने, अथक रूप से समाज सेवा औऱ विशेषतः पत्रिका को नियमित रूप से प्रकाशित करते रहने में स्वर्णिम योगदान का ही प्रतिरूप है।

निवर्तमान सम्पादक भाई डॉ. कुश ने शशांक जी के योगदान का बहुत ही सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है। शशांक को बहुत बहुत बधाई और नई जिम्मेदारी को निभाते हुए पत्रिका को नई ऊंचाई तक पंहुंचाने हेतु शुभकामनाएं।

– **डॉ. ऋषभ चतुर्वेदी,** देहरादून

पालागन, बधाई संपादक शशांक जी को। चंद्रिका का प्रारूप बहुत ही सुंदर है। संपादकीय बहुत अच्छी है। सभापति जी का अपने शब्दों में वर्णन तथा अपने विचार रखना। मंत्री जी का एक एक चीज पर प्रकाश डालना वास्तव में पूरी टीम को कहने के लिए शब्द नहीं है। पूरी टीम पूरे तारतम्य में एक साथ, एक दिशा में आगे बढ़ती दिख रही है। पुनः संपादक जी को बधाई।

– **विपिन चतुर्वेदी,** लखनऊ

पालागन, मन में आया और बैठे बैठे पहली बार कोई कविता लिखी। वह भी शशांक को शुभकामनाओं सहित आशीर्वाद संदेश देने के लिए

नये सम्पादक का है नया रूप
चतुर्वेदी चंद्रिका का नया स्वरूप
ऐसा मिले सबका सदैव आशीष
भव्य हो कलेवर और मन हो अभिभूत
भागे करोना दूर दूर – सब हो प्रसन्न
साथ हो सपरिवार के दीपावली सम्पन्न

– **मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी,** नोयडा

भाइयों का साथ बुजुर्गों का आशीर्वाद,
तरूणाई की ऊर्जा अनुभव का दुलार।
इतने आशीष मिलेंगे, साथ साथ तो,
ईश कृपा से जरूर होंगे बैतरनी पार।।

– **शशांक चतुर्वेदी...**

जब हौसला बना लिया..
ऊंची उड़ान का..!
फिर देखना फिज़ूल है..
क़द आसमान का..!!

– **आशुतोष चतुर्वेदी,** कानपुर

पालागन। नव संपादक के साथ चंद्रिका का कलेवर भी बजनदार लगा। शशांक जी व चंद्रिका तो विगत कई वर्षों से एक दूसरे के पूरक हैं। महासभा के प्रथम आनलाइन अधिवेशन (३४वा) की विस्तृत जानकारी के साथ ही लगभग ३६ लोगों की प्रतिक्रिया ही पत्रिका की व्यापकता को दर्शाता है,यही नव संपादक की लम्बी पारी की पहली विजय हैं। मंत्री जी का प्रतिवेदन एवं अध्यक्ष जी का अभिभाषण महासभा के उज्ज्वल भविष्य के लिए कार्ययोजना समाज को क्रियाशील बनाने में सफल होगी, ऐसा विश्वास है। नवनिर्वाचित अध्यक्ष एवं नयी कार्यकारिणी को सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। शशांक जी को संपादक के रूप में सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

– **सुगंधा चतुर्वेदी,** उन्नाव (उ. प्र.)

शशांक जी,पालागन।

आपके नेतृत्व में प्रकाशित चंद्रिका का प्रथम नवंबर अंक प्राप्त हुआ। सामाजिक जिम्मेदारी सभी के सकारात्मक सहयोग से ही पूर्ण होती हैं। आपकी कार्यप्रणाली का ही मूल तत्व है।

सभापति डा०प्रदीप जी का समाज से सहयोग का आग्रह एवं संस्था के भविष्य के लिए कार्ययोजना से उम्मीद का संचार होता है। संपादक जी का समाज के हर वर्ग से सम्पर्क एवं संवाद है, आशा है इससे पत्रिका समाज का दर्पण बनकर महासभा के साथ ही सामाजिक चेतना की प्रगति की सार्थक वाहक बनेगी। महासभा एवं चंद्रिका के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ.....

– **दिलीप सिकन्दरपुरिया,** लखनऊ

--

बंधुवर पालागन, सर्वप्रथम नवीन कार्यकारिणी के गठन पर समस्त कार्यकारिणी का अभिनंदन। कोरोना के समय में माननीय अध्यक्ष जी के चयन के उपरांत डिजिटल माध्यम से महासभा का अधिवेशन व कार्यकारिणी का गठन किया गया। जिससे यह सिद्ध होता है कि चतुर्वेदी समाज समय के साथ चलने में पूर्ण विश्वास रखता है। सबसे ज्यादा हर्ष का विषय यह है कि सन 1920 में महासभा का पंजीकरण आगरा में हुआ था एवं वर्तमान में महासभा की स्थापना का शताब्दी वर्ष चल रहा है। महासभा का एक गौरवशाली अतीत रहा है। वर्तमान समय में महासभा एक नए कलेवर के साथ नवयुग में प्रवेश कर चुकी है। डॉ. प्रदीप जी ने अपने उद्बोधन में महासभा की एक नई रूपरेखा की प्रस्तावना समाज के सामने रखी है। जिससे आने वाले समय में समाज का एक नया स्वरूप देखने को मिलेगा। डॉ. प्रदीप जी व उनके दिशा निर्देशन में नवीन कार्यकारिणी महासभा के नए आयाम स्थापित करेगी। ऐसी मेरी आशा है। मैं महासभा के उज्जवल भविष्य व सफलता की कामना करता हूं।

– **मधुकर पाठक,** आगरा

मंजिल तो मिल ही जाएगी एक दिन,
मुझे चाहे कितना भी भटकना पड़े।।

संपादक जी के भावों के अनुसार भटकना न पड़े। यह भटकन अब समाप्त हो गई है। भटकते राही को रास्ता तो मिल गया है, मंजिल भी निश्चित रूप से मिलेगी। संपादक जी का प्रथम संपादकीय सार्थक प्रतीत व दृष्टिगोचर हो रहा है। उन्होंने अपने श्रेष्ठ पूर्वजों से लेकर वर्तमान सहयोगीयों का स्मरण किया है। अपनी टीम के साथियों के साथ संपूर्ण समाज के सहयोग व मार्गदर्शन करने का आग्रह भी किया है। भाई शशांक जी के पहले संपादकीय में विनम्रता के भाव के साथ अपनी जिम्मेदारी का भी एहसास बोध है। वह राष्ट्रीय नेतृत्व व समाज के विश्वास पर खरे उतरे ऐसी मेरी व समस्त भोपाल वासियों की कामना है। स्नेही सभापति जी द्वारा अपनी प्रथम कार्यकारिणी की मीटिंग में संपूर्ण समाज के समक्ष जो विजन कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया है। वह सराहनीय है। मेरे पश्चात वर्तमान सभापति डॉ प्रदीप जी ने सामाजिक उत्थान का जो संकल्प लिया है, वह प्रशंसनीय है। पूर्व सभापति श्री रज्जन जी द्वारा प्रारंभ की गई अन्नपूर्णा योजना में महंगाई को देखते हुए वृद्धि की ऐतिहासिक घोषणा स्वागत योग्य है। विवाहोत्तर समस्या के निदान, ग्रामीण व तीर्थ स्थानों पर कार्यकारिणी की बैठकों का आयोजन, युवाओं को जोड़ने हेतु खेल व सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहन जैसी कई योजनाएं घोषणा पत्र में सम्मिलित हैं। सचिव भाई मुनींद्र जी की सक्रियता का ही परिणाम है कि संपूर्ण कार्यकाल की कार्यकारिणी बैठकों को पूर्व से ही तय कर दिया गया है, जो समाज के इतिहास में पहली बार है। उन्होंने संपूर्ण कार्यकारिणी से समन्वय स्थापित कर कार्य प्रारंभ कर दिया है, जो समाज हित में शुभ संकेत है। प्रकोष्ठों के संयोजकों विशेषकर महिला व युवा प्रकोष्ठ समाज में सक्रियता प्रदान करेंगे। क्योंकि दोनों ही संयोजक अपने-अपने क्षेत्रों में सक्रिय हैं। ईश्वर से कामना यह है कि यह कार्यकाल महासभा का स्वर्णकाल बने।

- भरत चतुर्वेदी, भोपाल (पूर्व सभापति, संरक्षक महासभा)

पालागन, आप की प्रथम संपादकीय का अध्ययन किया। विनम्रता के जितने सोपान हो सकते हैं, मुझे सभी उसमें दृष्टिगोचर हुए। आपकी संपादन कला की बानगी का पूर्व आभास हुआ। संगठन चाहे कोई भी हो वह गोवर्धन पर्वत की तरह होता है। जब तक उसमें सभी की लाठी व कनिष्ठा ना लगे उठ नहीं सकता। समाज के बंधुओं और भगनियों से आप की अपील निश्चित ही रंग लाएगी।

जो कार्य करता है वह कहने का हक रखता है। मैं महासभा के सभापति आदरणीय डॉ. प्रदीप एवं सचिव आदरणीय मुनींद्र भाई साहब का साधुवाद एवं आभार व्यक्त करती हूं कि उन्होंने अपनी कार्यकारिणी में मुझ जैसी अकिंचन को स्थान देकर मातृशक्ति का गौरव बढ़ाया है और मैं अपनी चतुर्वेदी समाज की सभी सम्माननीय बहनों के सहयोग से उनकी अपेक्षाओं पर खरी उतरूंगी ऐसा उन्हें विश्वास दिलाती हूं।

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, महासभा

---

4 अक्टूबर 2020 को हुआ अखिल भारतीय माथुर चतुर्वेदी महासभा का ऑनलाइन सम्मेलन अत्यंत सराहनीय रहा। सम्मेलन को सुचारू गति से संपन्न कराने के लिए भाई मुनीन्द्र नाथ जी व सभी कार्यकर्ता बधाई के पात्र हैं। नए पुराने सभी लोगों को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं। शशांक जी को चतुर्वेदी चंद्रिका का संपादक नियुक्त किए जाने पर अत्यधिक प्रसन्नता हुई। आशा है इनके कुशल संपादन में पत्रिका नित नई ऊंचाइयों पर पहुंचकर नित नए सोपान प्राप्त कर सकेगी। गत वर्षो में विपरीत परिस्थितियों में शशांक जी ने अपनी जिम्मेदारियों का बखूबी निर्वहन किया था। आशा है भविष्य में और भी अच्छा कार्य होगा।

- डॉ. बीना चतुर्वेदी, जयपुर

मित्र

किन्हीं परिस्थितियों में भाई आपके प्रति बहुत चिंतित होते हैं एवं कुछ परिस्थितियों में मित्र आपको चिंताजनक परिस्थितियों से बचा लेते हैं। मेरे एक अति घनिष्ट मित्र गौड़ साहब मुम्बई इनकम टैक्स चीफ कमिश्नर से रिटायर हो मुम्बई में सैटेल हो गये। उनके पत्नि,बेटे, वहू उनके साथ रहते थे। एक बार मैं मुम्बई गया तो उन्होनें फोन पर बात की और कहा कि मैं मुम्बई की रास्ता आदि जानता हूं। मैं ही शाम को मिलने आ जाऊंगा, तुम परेशान न होना। वे किसी के साथ मेरी बहन के घर, जहां मैं ठहरा था, आये व अकेले घर पर आ गये। काफी देर वार्त्तालाप के बाद वे जाने लगे तो मेरे बहनोई ने कहा मै अपनी गाड़ी से गौड़ साहब को पहुँचा देता हूँ। मैं घर के कुर्ता पैजामा पहने ही उन्हें नीचे विदा करने गया तो बोले

- अविनाश चतुर्वेदी, कानपुर

अविनाश तुम भी बैठो। मेरा निवास पास ही है थोड़े देर साथ और रहेगा। मैं साथ में बैठ गया। उनके घर पर पहुँचे तो मुझे जिद कर घर के अन्दर चलने को कहने लगे मेरे पास पर्स वगैरह था नहीं। उनकी पुत्र वधू पहली बार मिलेगी तो कुछ देने के लिये नही था। अतः मैं टालने लगा। वे बोले दरवाजे से ऐसे ही नहीं लौट सकते और चुपचाप 500/- का नोट जेब में डालते हुये बोले मैं समझ गया तुम खाली हाथ हो इसलिए घर नहीं चलरहे हो, जो सत्य था। फिर मैंने आराम से घर के अन्दर जा पुत्र वधू को वही नोट देकर इज्जत बचाई। उनका वह कर्ज आज तक मेरे ऊपर है। ऐसे भी मित्र होते कि आपकी तकलीफ बिना बताते भाँप कर मदद करते हैं ।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा कार्यकारिणी

संरक्षक

डॉ. सतीश चतुर्वेदी,
नागपुर

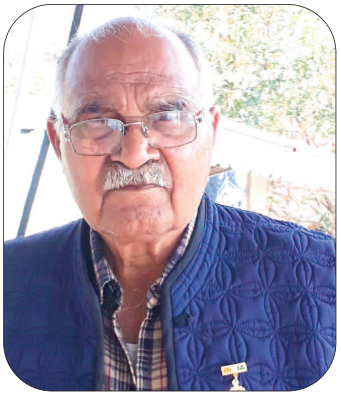

श्री भरत चंद्र चतुर्वेदी,
भोपाल (पूर्व सभापति)

श्री राजेंद्रनाथ चतुर्वेदी "रज्जन",
कोलकाता (पूर्व सभापति)

श्री राजेंद्र आर. चतुर्वेदी,
मुम्बई (पूर्व सभापति)

श्री त्रिभुवन चतुर्वेदी,
देहली

श्री कमलेश पाण्डे,
नोएडा (पूर्व सभापति)

लेफ्ट.जन. विष्णुकांत चतुर्वेदी,
नोएडा

श्री मदन चतुर्वेदी,
कोलकाता

श्री बाल कृष्ण चतुर्वेदी,
नोएडा

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा कार्यकारिणी

पदाधिकारी

डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी,
दिल्ली (सभापति)

श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी,
भोपाल (उपसभापति)

श्री कैलाश चतुर्वेदी,
कासगंज (उपसभापति)

श्री अखिलेश चतुर्वेदी,
लखनऊ (उपसभापति)

श्री मनोज चतुर्वेदी, बैंगलोर
(उप सभापति)

श्री मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी,
नोएडा (मंत्री)

श्री भरत चतुर्वेदी,
रिषड़ा (संयुक्त मंत्री)

श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी,
गाजियाबाद (संयुक्त मंत्री)

श्री आशुतोष चतुर्वेदी,
कानपुर (संयुक्त मंत्री)

श्री अंशुमान चतुर्वेदी, जयपुर
(संयुक्त मंत्री)

श्री महेश चतुर्वेदी,
दिल्ली (कोषाध्यक्ष)

श्री शशांक चतुर्वेदी, भोपाल
(संपादक, चतुर्वेदी चंद्रिका)

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा कार्यकारिणी

मा. सदस्य

श्री नीरज चतुर्वेदी,
हिंडौन

श्री दिलीप सिंकदरपुरिया,
लखनऊ

श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी,
नागपुर

डॉ. कुश चतुर्वेदी,
इटावा

श्री शशांक चतुर्वेदी,
भोपाल

श्री मनीष चतुर्वेदी,
हरदोई

डा. राकेश चतुर्वेदी,
मथुरा

श्री विनोद चतुर्वेदी,
मुम्बई

डा. राजीव चतुर्वेदी,
पुणे

श्री पंकज चतुर्वेदी,
मुम्बई

श्री सुशील पाठक,
मुम्बई

डॉ. ऋषभ चतुर्वेदी,
देहरादून

श्रीमती बीना मिश्रा,
हैदराबाद

श्री राकेश चतुर्वेदी,
बरेली

श्री करुणेश चतुर्वेदी,
ग्वालियर

श्री अजय चौबे,
भोपाल

श्री प्रदीप चतुर्वेदी "लालन"
(आगरा)

श्री भुवनेश चौबे,
गोंदिया

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा कार्यकारिणी

मा. सदस्य

श्री आलोक चतुर्वेदी,
प्रयागराज

श्री पुनीत चतुर्वेदी,
आगरा

श्री प्रदीप चतुर्वेदी,
ग़ाज़ियाबाद

श्री ललित चतुर्वेदी,
कोटा

श्री राहुल चतुर्वेदी,
मैनपुरी

श्री विशाल चतुर्वेदी,
पुरा

श्री गोविंद चतुर्वेदी,
जयपुर

श्री गोविंद चतुर्वेदी,
इंदौर

श्री ललित चतुर्वेदी,
लखनऊ

श्री अभयराज चतुर्वेदी,
गुरुग्राम

श्री विनय चतुर्वेदी,
अहमदाबाद

श्री अभिषेक चतुर्वेदी,
ग्वालियर

श्री प्रवेश चतुर्वेदी,
कानपुर

श्री नीलकमल चतुर्वेदी,
कोलकाता

श्री हेमंत चतुर्वेदी,
नासिक

श्री अनिल चतुर्वेदी,
प्रयागराज

श्री सुदीप चतुर्वेदी,
फिरोजाबाद

श्री सुशील चतुर्वेदी,
फ़रीदाबाद

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा कार्यकारिणी

स्थाई आमंत्रित सदस्य

श्री अविनाश चतुर्वेदी,
कानपुर

श्री पदम कुमार चतुर्वेदी,
लखनऊ

श्री प्रताप चंद्र चतुर्वेदी,
लोनी

श्री सुधीर चतुर्वेदी,
नोएडा

श्री सुभाष चतुर्वेदी,
मुम्बई

श्री राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी
"अन्नी", प्रयाग

श्री मनमोहन चतुर्वेदी,
मैनपुरी

श्री बिपिन पांडेय,
गाजियाबाद

श्री विपिन चतुर्वेदी,
लखनऊ

श्री शिव नारायण चतुर्वेदी,
कोटा

श्री कमलेश रावत,
कोटा

श्री लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी,
गाजियाबाद

श्री राहुल चतुर्वेदी,
मुम्बई

श्री प्रवीण चतुर्वेदी,
हैदराबाद

श्री ईश्वर नाथ चतुर्वेदी,
कोलकाता

श्री अरुण चतुर्वेदी,
जयपुर

श्री अमित चतुर्वेदी,
मथुरा

श्री योगेंद्र चतुर्वेदी,
ग्वालियर

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा कार्यकारिणी

विशेष आमंत्रित सदस्य

श्री नीरज चतुर्वेदी,
मैनपुरी

श्री गजेंद्र चौबे,
दमोह

श्री दिनकर राव चतुर्वेदी,
फरौली

श्री कौशल चतुर्वेदी,
दिल्ली

श्री मधुकर पाठक,
आगरा

श्री चैतन्य किशोर चतुर्वेदी,
फर्रूखाबाद

श्री संजय मिश्रा,
कानपुर

श्री अम्बर पाण्डे,
भोपाल

श्री अरुण चतुर्वेदी,
नागपुर

श्री मुकेश चतुर्वेदी,
रिषड़ा

श्री भारत भूषण चतुर्वेदी,
लखनऊ

श्री शशिकांत चतुर्वेदी,
आगरा

श्री अरविंद चतुर्वेदी,
फिरोजाबाद

श्री महेंद्र चतुर्वेदी,
जयपुर

श्री दिलीप चतुर्वेदी,
फिरोजाबाद

श्री लेखेंद्र चतुर्वेदी "पुत्तन",
लखनऊ

श्री शशांक गिरीश चौबे,
नागपुर

श्री संजय चतुर्वेदी,
अहमदाबाद

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा कार्यकारिणी

विशेष आमंत्रित सदस्य

श्री बसंत रमेश चौबे,
भिलाई

श्री हर्ष मोहन चतुर्वेदी,
"मोहित", आगरा

श्री दिनेश चतुर्वेदी,
बाह

श्री नितिन चतुर्वेदी,
निम्बाहेड़ा

श्री राजेश चतुर्वेदी, "गुड्डू",
कोलकत्ता

श्री भूपेंद्र चतुर्वेदी,
आगरा

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा कार्यकारिणी

महिला प्रकोष्ठ

श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी,
भोपाल (संयोजक)

श्रीमती नीलिमा चतुर्वेदी,
कानपुर

श्रीमती विनीता चतुर्वेदी,
देहरादून

श्रीमती समता चतुर्वेदी,
दौसा

श्रीमती पूनम चतुर्वेदी,
लखनऊ

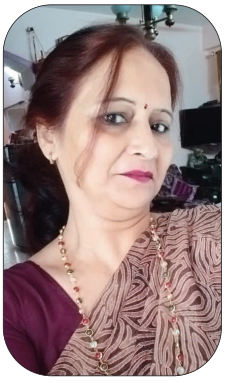

श्रीमती संध्या चतुर्वेदी,
ग्वालियर

श्रीमती अर्चना चतुर्वेदी,
जयपुर

श्रीमती दीपाली चतुर्वेदी,
ग्वालियर

श्रीमती रश्मि चतुर्वेदी,
नोयडा

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा कार्यकारिणी

युवा प्रकोष्ठ

डॉ. मनीष चतुर्वेदी,
कोटा

श्री सुधांशु चतुर्वेदी,
दिल्ली

श्री रीगल चतुर्वेदी,
भिंड

श्री दिवस चतुर्वेदी,
लखनऊ

श्री आशीष चतुर्वेदी,
आगरा

श्री आशीष चतुर्वेदी,
हावड़ा

श्री दुर्गेश चतुर्वेदी,
जयपुर

श्री गगन चतुर्वेदी,
पुरा

श्री पुलकित चतुर्वेदी,
नोएडा

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा कार्यकारिणी

चिकित्सा प्रकोष्ठ

डॉ. संजय चतुर्वेदी,
आगरा

डॉ. अरविंद चतुर्वेदी, (एम्स),
दिल्ली

डॉ. निखिल चतुर्वेदी,
आगरा

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा कार्यकारिणी

आईटी प्रकोष्ठ

श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी,
गाजियाबाद

श्री प्रसून चतुर्वेदी,
भुवनेश्वर

वास्तुशास्त्र मेरी नजर में

- -श्रीमती चित्रा चतुर्वेदी, भोपाल

संस्कृत में कहा गया है कि, 'गृहस्थस्य क्रियासरवा न सिध्यन्ति गृहं बिना।' वास्तुशास्त्र घर, प्रसाद, भवन अथवा मंदिर निर्माण करने का प्राचीन भारतीय विज्ञान है। इसे आधुनिक समय के विज्ञान आर्किटेक्चर का प्राचीन स्वरूप माना जा सकता है। जीवन में जिन वस्तुओं का हमारे दैनिक जीवन में उपयोग होता है, उन वस्तुओं को किस प्रकार से रखा जाए वह भी वास्तु है। वस्तु शब्द से वास्तु का निर्माण हुआ है। दक्षिण भारत में वास्तु की नींव परंपरागत महान साधु मायन को प्रणति माना गया है और उत्तर भारत में विश्वकर्मा को इसका प्रणेता माना गया है।भवनों के विन्यास, आकलन और रचना की तथा परिवर्तनशील समय तकनीक और रूचि के अनुसार मानव की आवश्यकताओं को संतुष्ट करने योग्य सभी प्रकारों के स्थानों के तर्कसंगत एवं बुद्धि संगत निर्माण की कला विज्ञान तथा तकनीक का सम्मिश्रण वास्तुकला यानी आर्किटेक्चर की परिभाषा में आता है । प्राचीन कला में वास्तुकला सभी कलाओं की जननी कही जाती थी, परंतु बदलते समय और परिवेश के साथ यह चीज अब नहीं रही। कुछ मतों के अनुसार, वास्तु कला भवनों के अलंकरण के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

जहां तक ऐतिहासिक वास्तु कला का संबंध है। वह अंशतः सत्य है। वास्तुकला को सभ्यता का सांचा भी कहा गया है। हम वास्तुकला को इस प्रकार भी स्पष्ट कर सकते हैं कि यह कला ललित कला की वह शाखा रही है जिसका उद्देश्य औद्योगिक का सहयोग लेते हुए उपयोगिता की दृष्टि से उत्तम भवन निर्माण करना है। जिनके पर्यावरण सुसंस्कृत और कलात्मक रुचि के लिए अत्यंत प्रिय सौंदर्य भावना के पोषक तथा आनंद कर और आनंद आनंद वर्धक हो। वास्तुशास्त्र ऐसी विद्या है जिसमें दिशाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। वास्तु के अनुसार भवन निर्माण करते समय भी भवन के नक्शे में दिशाओं का ध्यान रखा जाता है। हम मूलतः चार दिशाएं मानते हैं- पूर्व ,पश्चिम, उत्तर और दक्षिण। वास्तु विज्ञान में इन चार दिशाओं के अलावा भी चार दिशाएं हैं- आकाश और पाताल को भी इसमें दिशा में ही शामिल किया गया है। इस प्रकार इसमें चार दिशा चार विदिशा और आकाश पाताल मिलाकर 10 दिशाएं होती हैं। मूल दिशाओं के मध्य की दिशा ईशान, अग्नि, नैऋत्य और वायव्य को विदिशा कहा गया है।

1-वास्तु शास्त्र में पूर्व दिशा बहुत ही महत्वपूर्ण मानी गई है क्योंकि यह सूर्य के उदय होने की दिशा है। इस दिशा के स्वामी इंद्र देवता है। भवन बनाते समय इस दिशा को सबसे अधिक खुला रखना चाहिए। यह सुख और समृद्धि कारक होता है। यदि इस दिशा में वास्तु दोष होता है तो इस घर के सदस्य बीमार रहते हैं। परेशानियां और चिंताएं बनी रहती हैं। उन्नति के मार्ग में भी बाधा आती है।

2- पूर्व और दक्षिण के मध्य की दिशा को आग्नेय दिशा कहते हैं। अग्निदेव इसके स्वामी हैं। इस दिशा में वास्तु दोष होने पर घर का वातावरण अशांत और तनावपूर्ण रहता है। धन की हानि चिंता परेशानी बनी रहती है। यह दिशा शुभ होने पर भवन में रहने वाले स्वस्थ और ऊर्जावान रहते हैं। इस दिशा में रसोई का निर्माण वास्तु की दृष्टि से श्रेष्ठ होता है। अग्नि से संबंधित सभी कार्यों के लिए यह दिशा श्रेष्ठ है।

4-दक्षिण दिशा के स्वामी यमदेव हैं। यह दिशा सुख और समृद्धि के प्रतीक है। इस दिशा का स्थान खाली नहीं रखना चाहिए इस दिशा में वास्तु दोष होने पर घर में रोजी और रोजगार की समस्या आती है। गृह स्वामी के निवास के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है।

5- दक्षिण और पश्चिम के मध्य की दिशा को नैऋत्य दिशा कहते हैं। इस दिशा का वास्तु दोष दुर्घटना रोग एवं मानसिक अशांति देता है। यह आचरण एवं व्यवहार को भी दूषित करता है। इस दिशा का स्वामी राक्षस है। इस दिशा वास्तु दोष से मुक्त होने पर भवन में रहने वाला व्यक्ति सेहतमंद और सुख समृद्धि से भरपूर रहता है।

6- ईशान दिशा के स्वामी शिव होते हैं। इस दिशा में कभी भी शौचालय नहीं बनाना चाहिए। नलकूप, कुआं आदि इस दिशा में बनाने से जल प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता है।

इन प्रमुख चार दिशाओं के आधार पर घर को शुभ या अशुभ बताया जाता है। इसके अलावा गुरु, चंद्रमा, राहु और शुक्र की भी दिशाएं होती हैं लेकिन मोटे तौर पर उन्हें नजरअंदाज कर दिया जाता है। गुरु की दिशा उत्तर पूर्व, शुक्र की दिशा दक्षिण पूर्व, चंद्रमा की दिशा उत्तर पश्चिम, राहु की दिशा दक्षिण-पश्चिम मानी गई है। हर कोई सुख सुविधाओं से भरा जीवन जीना चाहता है। इसके लिए आवश्यक है कि हम अपने घर में कुछ चीजों को

हटा दें जिससे घर में नकारात्मक ऊर्जा का वास होता है। जैसे-

१-बंद घड़ियां: वास्तु शास्त्र के अनुसार बंद घड़ियां घर में नकारात्मक ऊर्जा फैलाती है। जिससे घर में धन संचय और धन आगमन बाधक होता है। अतः ऐसी मान्यता है कि घड़ी सुधरवाकर रखें या तो इसे घर से हटा दें।

२- टूटी चप्पल: घर में मौजूद टूटी चप्पल भी धन आगमन के कार्य को नष्ट करती हैं। कहते हैं टूटी चप्पल घर में दरिद्रता लाती हैं। घर के सदस्यों और विशेषकर घर की मुखिया की चप्पले तो कभी भी टूटी नहीं होनी चाहिए। टूटी चप्पल या तो बने या घर से बाहर फिकवा दें।

३- पायदान : ऐसी मान्यता है कि जिस घर में फटा पायदान होता है वहां माता लक्ष्मी का वास नहीं होता है। घर में आने जाने वाले लोग फटे पायदान से पांव रगड़ कर अंदर आते हैं। इससे दरिद्रता अंदर आती है। अतः फटा पायदान हटा देना चाहिए।

४-लकड़ियों का ढेर : अक्सर लोग अपने घर के एक कोने में लकड़ियों का ढेर लगा देते हैं, जो अशुभ माना गया है। ऐसी मान्यता है कि ऐसा करना होता है और घर में दरिद्रता का वास होता है।

वास्तुशास्त्र को बहुत से लोग टोना टोटका और धार्मिक आस्था से जोड़ते हैं, किंतु इसका किसी भी प्रकार की पूजा पाठ या तंत्र मंत्र से कोई लेना देना नहीं है। वास्तु में दिशाओं का महत्व होता है। किसी दिशा से आने वाली ऊर्जा को कैसे फायदा पहुंचा सकती है। यह शास्त्र इसी पर निर्भर है।

शयन कक्ष : वह स्थान जहां हर व्यक्ति प्रतिदिन अपने सोने की आदत के अनुसार कम से कम 6 से 8 घंटे बिताता है। सोने का भी यही समय होता है जब हमारा अवचेतन मस्तिष्क सबसे ज्यादा ग्रहण की अवस्था में होता है। ऐसे में शयनकक्ष का वास्तु हमें ना सिर्फ शारीरिक तौर पर प्रभावित करता है, बल्कि वह हमारे अवचेतन मस्तिष्क पर भी गहरा प्रभाव डालता है। आइए देखते हैं घर के मुखिया का शयन कक्ष वास्तु के हिसाब से कैसा हो।

मास्टर बैडरूम के लिए घर में नैऋत्य कोण सर्वोत्तम होता है।

बेड की व्यवस्था इस प्रकार हो कि सोते समय आपका सिर दक्षिण में हो।

पूर्व की तरफ सिर रखकर भी सोया जा सकता है।

पश्चिम में सिर रखकर सोना तीसरा और बेहतर उपाय है।

बेडरूम की ऊंचाई 10 फीट से ज्यादा ऊंची हो ,प्राकृतिक रोशनी और हवा का पर्याप्त स्थान चयन का घर के मुख्य द्वार से ज्यादा दूरी पर हो।

कक्ष का ब्रह्म स्थान सदैव खाली रखें।

ध्यान रहे अगर बेड लकड़ी का है तो बहुत अच्छा है वरना धातु का बेड नकारात्मक ऊर्जा देता है।

शयनकक्ष में रंग का बहुत महत्व होता है बेडरूम में लाल गुलाबी रंगों का संयोजन किया जा सकता है।

प्रभावी चमकीले रंग बेडरूम के लिए उपयुक्त नहीं होते।

बेडरूम में आप मनी प्लांट का पौधा लगा सकते हैं। यह शुक्र का कारक होता है।

बेडरूम में राधा कृष्ण की तस्वीर लगाना शुभ मानते हैं। बेडरूम में प्रत्येक सामान व्यवस्थित होना चाहिए

बेड के सामने दरवाजा ना हो यदि हो तो उस पर पर्दा पड़ा रहना आवश्यक है।

इसी प्रकार अन्य वास्तु टिप्स का प्रयोग कर हम अपने जीवन में सुख शांति ला सकते हैं। एक चीज ड्रेसिंग टेबल के सामने ना रखें यह सदैव साइड में ही रखी जानी चाहिए।

बच्चों का बैडरूम: बच्चे ऐसे बीज की भांति होते हैं जिनमें विकास की अनंत संभावनाएं छिपी रहती हैं। बच्चों की प्रतिभा को विकसित करने के लिए उन्हें सकारात्मक माहौल देना आवश्यक होता है और यह सकारात्मक माहौल विकसित करने में उनका बेडरूम महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बच्चों के बेडरूम में वास्तु के हिसाब से ध्यान देने योग्य कुछ बातें –

बच्चों का बेडरूम पूर्व या पश्चिम दिशा में हो।

बेड नैऋत्य दिशा में रखना ही सही रहता है बेड को दीवार से कुछ दूरी पर रखें।

सोते वक्त बच्चों का सिर पूर्व या दक्षिण दिशा में रहे कमरे का प्रवेश द्वार उत्तर या पूर्व दिशा में रहे।

उत्तर या पूर्व दिशा में स्टडी टेबल रखी जा सकती है।

फर्नीचर और भारी सामान नैऋत्य दक्षिण या पश्चिम दिशा में रखें कंप्यूटर या लैपटॉप पूर्व दिशा में रखा जा सकता है ।

टीवी के लिए उत्तर दिशा उपयुक्त है।

ब्रह्म स्थान पूर्णता खाली होना चाहिए। कमरे की दीवारों पर हल्के रंग का प्रयोग करें।

बेडरूम में बहुत अधिक तस्वीरों और चित्रों को ना लगाएं ।

बच्चों के अवचेतन मन मस्तिष्क पर सकारात्मक ऊर्जा अच्छा प्रभाव डालेगी और उनका विकास सही दिशा में होगा। इसलिए वास्तु के हिसाब से बना बच्चों का बेडरूम उनके लिए बेहद लाभकारी सिद्ध होगा।

ड्राइंग रूम : बैठक कक्ष में में दिन भर बाद घर के सभी सदस्य एक साथ बैठते हैं। अपना दिन का समय कैसा व्यतीत हुआ उस पर चर्चा करते हैं और भविष्य की योजनाएं बनाते हैं। हम अपने घर आए अतिथियों का मान सम्मान यही ड्राइंग रूम में बैठा कर करते हैं। ड्राइंग रूम का वास्तु शास्त्र हो नजर डालते हैं-

रूम भवन के वायव्य कोण उत्तर दिशा पूर्व एवं ईशान कोण

के मध्य बनना चाहिए।

रूम में पानी का ढलान सदैव उत्तर पूर्व दिशा की ओर होना चाहिए।

रूम की दीवारों का रंग हल्का शांत और सौम्य होना चाहिए। इसमें दिशा के अनुसार हल्के नीले हरे पीले और रंगों का प्रयोग कर सकते हैं। काला, गहरा नीला, गहरा भूरा आदि रंगों का प्रयोग ना करें।

भारी सामान भारी सजावट की चीजों से बचें । यह चीजें वातावरण को बोझिल बनाते हैं।

ड्राइंग रूम में दक्षिण एवं पश्चिम दिशा में भारी फर्नीचर लगाएं, उत्तर और पूर्व दिशा की ओर हल्का सामान रखा जा सकता है।

उत्तर या पूर्व में मनी प्लांट बांस का पेड़ या कोई छोटा इनडोर प्लांट पौधा रखना सुंदरता के साथ समृद्धि कारक माना गया है।

पूर्व दिशा में शुभ माना गया है इससे घर के सदस्यों के ऊपर आने वाली विपत्तियां टल जाती है और सकारात्मक ऊर्जा और धन आगमन की निरंतरता बनी रहती है ।

ड्राइंग रूम कूलर एयर कंडीशनर को आग्नेय कोण या पश्चिम दिशा में होना चाहिए।

वास्तु के अनुसार ड्राइंग रूम में सजावट के लिए बनाए गए शोकेस या अलमारी दक्षिण पश्चिम दिशा में उपयुक्त माने जाते हैं।

ड्राइंग रूम में इलेक्ट्रॉनिक आइटम सामान दक्षिण पूर्व दिशा में लगवाना उचित माना गया है।

दीवार की पूर्वी उत्तर दिशा में बनवाने से आपको पर्याप्त प्राकृतिक रोशनी और हवा मिलती रहेगी।

घड़ी लगाने को दीवार पर उत्तर पूर्वी दिशा शुभ फलदाई मानी गई है।

ड्राइंग रूम में शोपीस या पेंटिंग प्राकृतिक मनोहारी दृश्यों वाले लगाने चाहिए। इन्हें देखने से सकारात्मक ऊर्जा हम अनुभव कर पाते हैं। यदि आप भोजन ड्राइंग रूम में डाइनिंग टेबल पर करते हैं तो यह टेबल आग्नेय कोण में होनी चाहिए यहां बैठकर भोजन करने से घरवालों की सेहत ठीक रहती है ।

ड्राइंग रूम में फूलों की सजावट और सुंदर पर्दे सकारात्मक ऊर्जा देते हैं। भवन के प्रवेश द्वार पर मांगलिक तोरण और थोड़ी सी फूलों की सजावट भी शुभ मानी जाती है।

पूजा घर : घर पर पूजा घर का स्थान सबसे अहम होता है। पूजाघर घर का वह हिस्सा है जहां से हमें सबसे ज्यादा शांति और ऊर्जा प्राप्त होती है। पूजाघर वास्तु नियमों के अनुसार होना चाहिए, वरना हमें सुख शांति के स्थान पर परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। वास्तु के अनुसार पूजा घर की सबसे अच्छी दिशा ईशान कोण यानी गई है। पूजा करते समय मुख, पूर्व या उत्तर दिशा की ओर करना चाहिए। वास्तु में कहा गया है कि धन प्राप्ति के लिए उत्तर दिशा और ज्ञान प्राप्ति के लिए पूर्व दिशा की ओर मुख करके की गई पूजा चमत्कारी लाभ देती है। पूजाघर में नियमित रूप से दीप जलाना और शंख रखने से परिवार में सुख शांति का वातावरण बनता है। पूजाघर में कभी भी खंडित मूर्ति ,एक ही भगवान की दो मूर्ति ना रखें। पूजाघर में केवल भगवान की मूर्तियां फोटो और पूजन सामग्री रखनी चाहिए। घर में सुख शांति समृद्धि के लिए पूजा स्थल का निर्माण किया जाता है। किसी भी व्यक्ति के मन आत्मा और संस्कार का परिमार्जन करते हैं विचारों को शुद्ध करते हैं और आत्मा को दिव्य प्रकाश से ओतप्रोत करते हैं ।

अध्ययन कक्ष वास्तु के हिसाब से बना है, तो बच्चों का पढ़ाई में मन भी लगता है और उसमें क्रिएटिविटी का विकास भी होता है। इसके लिए पूर्व उत्तर और विदिशा उत्तम है। अध्ययन करते समय बच्चा उत्तर या पूर्व की ओर मुख करके बैठे, अध्ययन कक्ष ईशान कोण खाली हो, अध्ययन कक्ष में माता सरस्वती और महान पुरुषों की तस्वीर लगाई जा सकती है। वास्तुकार जंपिंग फेस डॉल्फिन मछली के जोड़े में किसी भी एक का चित्र उत्तर की दीवार पर लगाने की सलाह देते हैं ।

किचन : उपनिषदों में कहा गया है कि, 'जैसा अन्न वैसा मन' अर्थात जैसा हम भोजन करते हैं उसी के अनुसार हमारा शारीरिक और मानसिक विकास भी होता है। शुद्ध पवित्र भोजन मनुष्य को आयु बल और आरोग्य तथा सुखी बनाता है । रसोई स्वच्छ होने से ही भोजन आरोग्य वर्धक बनता है। रसोई के लिए उपयुक्त स्थान दक्षिण पूर्व होता है। यह दिशा अग्नि तत्व को नियंत्रित करती है। किचन में गैस स्टोव भी दक्षिण पूर्व दिशा में रखना उत्तम मानते हैं।

पानी कभी भी गैस चूल्हे के आसपास ना रखें। सभी इलेक्ट्रिकल अप्लायंसेज जैसे माइक्रोवेव, टोस्टर आदि को दक्षिण पूर्व दिशा में रखें। भंडारण के लिए अलमारी दक्षिणी और पश्चिमी दिशा पर बनवाना ही ठीक रहेगा। किचन में खिड़की पूर्व दिशा में पानी ठीक रहती है। यदि ऐसा संभव नहीं है तो पूर्व दिशा में एक एग्जास्ट फैन लगवाया जा सकता है। वास्तु के हिसाब से वाइब्रेंट कलर ग्रीन कलर का प्रयोग अच्छा मानते हैं। दूर ही रखना चाहिए। बगल में शौचालय, बाथरूम बनाना। रसोई घर में खाना बनाएं। घर में सदैव सकारात्मक ऊर्जा बनी रहे इसके लिए स्वच्छ रखना आवश्यक है। वास्तु शास्त्र का ज्ञान सीमित है। जिसे एक निबंध वास्तु शास्त्र का ज्ञान अनंत है। जिसे एक निबंध या लेख में उतारना संभव नहीं। यह हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि किसी स्थान को मनुष्य के बसने योग्य बनाने की कला को वास्तु कला कहते हैं। विज्ञान तथा तकनीक का मिश्रण इस कला में आता है।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के ३४ वें अधिवेशन के पूर्व संध्या के महत्वपूर्ण अवसर पर एक बेहद शानदार रहा

दिनांक 3 अक्टूबर 2020 को आयोजित 'ऑन लाइन ' कवि सम्मेलन'

पूरी तरह से सोशल डिस्टेंसिंग का निर्वाह करते हुए 'ज़ूम एप' पर... हमारे 'चतुर्वेदी समाज' के ख़्यातिलब्ध कवि बांधवों ने लाज़वाब प्रस्तुति दी। इस अभूतपूर्व गोष्ठी में कवियों का स्वागत महासभा की और से मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी कार्यवाहक मंत्री ने किया। सभी कवियों और शायरों ने जमकर रचना पाठ किया।

कार्यक्रम के संचालक श्री सुभाष चतुर्वेदी जी- मुम्बई ने अपनी अनौपचारिक व सरस भाषा में हँसते-खिलखिलाते माहौल में एक-एक कर सभी कवियों को आमंत्रित किया।

सबसे पहले जयपुर से पधारे श्री आलोक चतुर्वेदी जी' ने सरस्वती वंदना व एक घनाक्षरी छंद से कवि सम्मेलन का आग़ाज़ किया। तत्पश्चात डॉ कुश चतुर्वेदी, इटावा ने अपनी अद्भुत वक्तव्य क्षमता के साथ बृजभाषा में छंद व कुछ सामयिक कविताएं पेश की,जो जमकर सराही गयीं। श्रीमती निरुपमा चतुर्वेदी जो कि जयपुर में रहतीं हैं, पिछले 6-7 वर्षों में शायरी व कविता की दुनिया में उभरता एक नया नाम हैं, उन्होंने भी अपना एक गीत लयबद्ध तरीक़े से पेश किया। गीत, आज की विषम परिस्थितियों में आशा का संचार करता हुआ बेहद सकारात्मक व सार्थक था। इसके बाद उन्होंने 2 गज़लें भी पेश की, जिन्हें भरपूर पसन्द किया गया, खूब दाद दी गयी।

सुभाष जी ने ...अपने मस्तमौला स्वभाव के साथ ही अवसर का लाभ उठाते हुए इसके तुरंत बाद अपनी लघु क्षणिकाएँ व कुछ शेर पेश किये। उनके द्वारा प्रस्तुत सभी रचनाएँ सुनने में सरल किंतु गहन भावों को संजोए हुए वर्तमान समाज की विसंगतियों पर वार करती हुई,तीखी तंज स्वरूप थीं। बेहद सारगर्भित व सामयिक रचनाएँ रहीं आदरणीय की।

अब बात करूँगा ...देश में ही नहीं विदेशों में भी अपनी प्रसिद्धि का परचम फहराते हुए, नामचीन शायर सूफी सुरेंद्र चतुर्वेदी जी की.....जिनका नाम और शायरी किसी परिचय की मोहताज नहीं। बेहद उम्दा व नायाब शेर और गज़लें पेश कीं, सूफ़ी जी ने। यकीनन,आप बे-मिसाल शायर हैं। अंत में...सम्मेलन के सबसे वरिष्ठ कवि, देश के अत्यंत प्रसिद्ध पैरोडीकार व सिद्धहस्त मुक्तक सम्राट वरुण चतुर्वेदी जी, जयपुर ने काव्य-पाठ किया। कई शानदार मुक्तक व अपनी सुमधुर फ़ल्मि लय से प्रस्तुत की गई पैरोडी से,उन्होंने ऐसा समाँ बाँधा, कि श्रोतागण झूम उठे। अंत में सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में श्री प्रदीप चतुर्वेदी जी सभापति महासभा ने अपने आभार ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन किया। कार्यक्रम के संयोजक श्री सुभाष जी तथा तकनीकी संयोजक श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी का इस कार्यक्रम में मुख्य योगदान था।

- मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी, मंत्री

कहानी : छापा हाथ का

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी, भोपाल

रोशन लाल जी घर के बाहर चबूतरे पर बेचैनी से टहल रहे थे। चेहरे पर घबराहट स्पष्ट दिखाई दे रही थी। चेहरे पर उदासी के बादल पूरी तरह से छाए थे। लगता था कोई कुछ कहता तो बादल आंखों के रास्ते से बरस पड़ते। अंदर से पत्नी सुजाता के कराहने की आवाज आ रही थी। वह आवाज रोशन लाल जी का हृदय विदीर्ण कर रही थी। तभी अंदर से बच्चे की रोने की आवाज सुनाई पड़ी चेहरे पर खुशी तथा आंखों में चमक आ गई। रोशन लाल जी को जैसे जमीन से अकूत धन संपत्ति अचानक प्राप्त हो गई हो। दद्दू, लक्ष्मी आई है बधाई धनिया ने अंदर से आकर चहक कर कहा। "सुजाता और बच्ची कैसी है" रोशन लाल जी ने पूछा।

दद्दू एकदम परी है, नीली आंखों वाली

रोशन लाल जी की खुशी का पारावार नहीं था। लोग आस-पड़ोस के उन्हें बधाई देने आ रहे थे। शादी के 15 साल बाद वह पिता बने थे। एक बड़े थाल में मोतीचूर के लड्डू रखे थे। सबका मुंह मीठा उसी से हो रहा था।

जब सभी लोग चले गए तब रोशन लाल जी अंदर गए तथा पत्नी के कमरे में जाकर पत्नी को बधाई देते हुए आंखों से आंसू निकल पड़े। पत्नी ने उस नन्ही परी को रोशन लाल की गोदी में दिया। वास्तव में वह नन्ही परी ही थी रोशन लाल जी ने कहा आज से इसका का नाम परी होगा। नीली आंखें गौर वर्ण काले घुंघराले बाल तथा शरीर से भी पुष्ट। रोशन लाल जी ने दोनों हाथ ऊपर उठाकर का भगवान तेरा लाख-लाख शुक्र है, धन्यवाद है। सुजाता अंदर से फूली नहीं समा रही थी। नन्ही परी को देखकर वात्सल उछल उछल कर बाहर आ रहा था। 15 साल बाद अब कोई मुझे मां पुकारेगा। मां शब्द सुनने को मेरे कान तरस रहे थे। अब मुझे चैन पड़ी। घर में कोई चीज की कमी नहीं थी। संपन्नता थी। बच्ची की देखभाल के लिए एक दाई लगाई गई। जो बच्ची को तेल मालिश कर कर पूरी तरह से स्नान कराकर सजा कर उसे दिनभर रखती। अच्छी देखभाल होने के कारण बच्ची में भी चंचलता आ गई। बिस्तर पर पलटा खाने लगी बिस्तर पर खिसक कर एक किनारे आ जाती।

लेकिन थोड़े ही दिन में इस बात का आभास हो गया की परी को दिखाई नहीं पड़ता। हर तरह से इलाज कराया दुनिया के डॉक्टरों को दिखाया लेकिन कोई भी फायदा नहीं हुआ। सुजाता ने मुकद्दर मानकर स्वीकार कर लिया। सुजाता के सपने टूटने लगे। वह बच्ची के किलकारी लगाकर दौड़ना फिर गिरना फिर उठकर दौड़ना। चलने का प्रयास यह सब देखकर जो मॉ को आनंद की अनुभूति होती है। उससे वह पूरी तरह से वंचित हो गए। परी को जहां बैठा देते एक तरफ कोने में वही बैठी रहती। उसके पैरों में घुंघरू की पायल पहना दी ताकि वह अपनी आवाज सुन कर चले।

गेंद में चांदी के घुंघरू लगे। गेंद फेंके तो आवाज सुनकर उस तरफ परी जाए। दोनों पति-पत्नी उसे आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे। और काफी हद तक वह इसमें सफल भी हुए। परी धीरे-धीरे बड़ी होने लगी और घर के छोटे-मोटे काम मैं मां का हाथ बँटाने लगी। सुबह 5 बजे चिड़ियों की चहक सुनकर तो सुनकर उठ जाती। आंगन में, दलान में झाड़ू लगाना, नल से पानी भरना। सब्जी काट कर रख देना आदि कार्य वह मां के साथ करती। ऐसा कहा जाता है जिसकी नेत्र में रोशनी नहीं होती उनके अन्य ज्ञानेंद्रियां तीव्र होती हैं। भगवान ने बहुत सुरीली आवाज दी थी। वह संगीत में पारंगत हो गई।

जैसे-जैसे परी बड़ी होती गई वैसे-वैसे दंपति की चिंता बढ़ने लगी। परी की शादी की चिंता उसे सताई जा रही थी। जमीन आसमान एक कर दिया पर लड़का ना मिला। धन दौलत जमीन जायदाद हर देकर हर तरह के प्रयास किए किंतु कोई लाभ न हुआ। घर जमाई बनाने का प्रस्ताव भी रखा। गरीब से गरीब परिवार ढूंढा। शायद तैयार हो जाए। तो हम लोगों को कन्यादान का पुण्य प्राप्त हो जाए।

उधम रोशन लाल जी की खुशी का ठिकाना न था। नाई एक प्रस्ताव लाया था। पास के गांव में एक लड़का है। थोड़ी सी कसर यह है कि वह एक पैर से लगड़ा है। विधवा विवाह का समर्थक है, कहता है किसी लड़की का उद्धार करके मैं शादी कर लूंगा। रोशन लाल जी ने आंख बंद करके हां कह दी। आज वह लड़का परी को देखने आने वाला था। तरह-तरह के पकवान व मिठाईयां बन रही थी। घर की सजावट हो रही थी। सारी तैयारियां हो चुकी थी। और सुमेर रोशन लाल जी के यहां पहुंच गए। बातचीत हुई घर परिवार के बारे में जाना तो मालूम पड़ा। नाव पलटने से सारा घर गंगा मैया में समा गया था। सुमेर अकेला था। परी को सुमेर के सामने लाया गया सुमेर को परी पसंद आ गई। दोनों की बड़ी धूमधाम से शादी की गई।परी जब विदा हुई तो उसके साथ धनिया को भी भेजा गया परी की सहायता करने के लिए।

दोनों निश्चिंत हो गए थे और भगवत भजन में लग गए। परी का नित्य कर्म वही रहा जो शादी से पहले था सुबह उठना स्नान ध्यान करना तथा भगवान की का पूजन कर आरती तथा भजन गाना जब वह भजन गाती तो ऐसा लगता जैसे सरस्वती उसकी जुबान पर आकर बैठ गई। कानों में मिश्री घुल रही है। गांव में उसके संगीत की धूम थी। मंदिर जाना दर्शन करना तथा लोगों के आग्रह से भजन गाना जैसे नित्य कर्म हो गया था। धनिया की अनुभवी आंखों ने पहचान लिया की परी गर्भवती है। समय अनुसार गोद भराई की रस्म हुई तथा मां उसकी जचकी करने परी के पास आ गई।

गोद भराई की रस्म हुई 3 गांव के लोग आये। समय पूरा होने पर परी ने एक लड़की को जन्म दिया।

' दद्दू बधाई हो लक्ष्मी आई है। नाना बन गए' धनिया ने अंदर से आकर रोशन लाल जी तथा सुमेर से कहा। सुमेर की स्थिति देखकर उन्हें परी के जन्म के समय की याद आ गई।

धनिया ने कहा, दूसरी परी है। नीली आंखें, काले बाल, चंपई रंग भगवान ने बड़े मन से मूरतगढ़ दी है। बच्ची की नीली आंखें सुनकर रोशनलाल के मन में शंका पैदा हो गई, लेकिन मुंह से कुछ ना बोले पत्नी से पूछा बच्ची कैसी है पत्नी बोली हीरे की कनी है। परी पूछती मां कैसी है हमारी लाडो नीली आंखें शब्द सुनकर उसका दिल भी बैठा जा रहा था, हे भगवान कहीं मेरी तरह से नेत्रहीन तो नहीं।

भगवान के घर देर है अंधेर नहीं

आंखों का चेकअप कराया सब कुछ बढ़िया थी। धीरे-धीरे बच्ची बड़ी होने लगी और उसका नाम रखा नीलम। बाल सुलभ चंचलता उस में कूट-कूट कर भरी थी। आसपास के लोगों का वह खिलौना थी। लेकिन हाय रे भाग परी उसकी किलकारियां ना देख सके और ना उसके खेल। सुमेर कहता परी देखो नीलम कैसे चल रही है। उसी में वह भूल जाता परी देख नहीं सकती केबल आभास कर सकती है। परी के अंदर की ललक बढ़ती गई वह रंगीन दुनिया देखना चाहती थी। बच्ची कैसे देखें, कैसे उसके बाल सुलभ खेल देखकर आनंद से अभिभूत हो। परी पहली वाली परी नहीं रही। वह एक चिड़चिड़ी सी महिला बन गई। बात-बात पर झुंझला जाती। मन का आक्रोश कहां निकाले।

सुमेर समझ नहीं पा रहा था परी में इतना तेजी से परिवर्तन क्यों हुआ। उसकी मानसिक दशा को वह समझ नहीं पा रहा था। मां के अंदर की ममता वात्सल्य का उसे आभास नहीं था। हर मां बच्चे का सुख लेना चाहती है और उसके बचपन की तोतली भाषा उसके खेल उसकी चंचलता अपने दिल में धरोहर के रूप में रख लेती। किसी भी बात पर बच्चे का मचलना, मिट्टी खाना हाथ और मुंह मिट्टी में सने होने पर भी मना करना इन बातों में जो सुख व आनंद है। मां को किसी और बात में नहीं मिलता।

धनिया की मां बीमार हो गई और धनिया गांव चली गई। संयोग से सुमेर भी किसी काम से बाहर गया था। नीलम दूध पीने के लिए मचल रही थी। परी ने लाइटर से गैस को जलाया तथा हाथ से गर्मी महसूस की दूध बर्तन में डालकर गर्म किया तथा बर्तन को पल्ले से उतारा।

पल्लू ने आग पकड़ ली इसका आभास परी को उस समय नहीं हुआ। रसोई से बाहर निकली हवा लगी और आग तेजी से भभक उठी। उसी समय सुमेर आ गया। वह परी की साड़ी खोलने के लिए खींचने लगा। लेकिन परी आभास न कर पाई कि सुमेर साड़ी खींच रहा है। परी बदहवास सी इधर-उधर दौड़ने लगी आग भभक गई और परी जल गई। अस्पताल में भर्ती किया गया। लेकिन 80 प्रतिशत जलने के कारण बचने की उम्मीद समाप्त हो गई। तब उसने सुमेर से कहा देखो सुमेर मैं जा रही हूं। नीलम का ख्याल तुम्हें रखना है। नीलम जब बड़ी हो जाए और मेरी बात पूछें मां कैसी थी उस समय उसे ना बताना कि मैं देख नहीं सकती थी। मेरे बॉक्स में नीचे एक लाल रंग का कपड़ा है। उस पर मेरे हाथ के छापे लगे हैं। जब वह मुझे याद करें। वह छापे उसे दिखा देना तथा शादी करते समय उन हाथ के छापों को मां के स्थान पर रखना। सुमेर के टप टप आंसू झर रहे थे। अच्छा क्या इसीलिए ही तूने लाल कपड़ा मंगाया था। नीलम के लिए दिया हुआ मेरा आशीर्वाद है। पति ने पूछा, मेरे हाथ के छापे जो तुमने लिए थे, वह कहां हैं ? परी ने कहा वह पूजा घर में हैं। मैं रोज उनकी पूजा करती थी। आप मेरे भगवान हो। मैं ईश्वर से प्रार्थना करूंगी कि यदि मेरा अगले जन्म में मनुष्य का जन्म हो तो मैं नीलम की कोख में उसका बच्चा बन कर आऊं, ताकि उसे मैं जी भर कर देख सकूं। कहते कहते परी की गर्दन लुढ़क गई। सुमेर परी परी कहता रह गया।

उधम रोशन लाल जी की खुशी का ठिकाना न था। नाई एक प्रस्ताव लाया था। पास के गांव में एक लड़का है। थोड़ी सी कसर यह है कि वह एक पैर से लगड़ा है। विधवा विवाह का समर्थक है, कहता है किसी लड़की का उद्धार करके मैं शादी कर लूंगा। रोशन लाल जी ने आंख बंद करके हां कह दी। आज वह लड़का परी को देखने आने वाला था। तरह-तरह के पकवान व मिठाईयां बन रही थी। घर की सजावट हो रही थी। सारी तैयारियां हो चुकी थी। और सुमेर रोशन लाल जी के यहां पहुंच गए। बातचीत हुई घर परिवार के बारे में जाना तो मालूम पड़ा। नाव पलटने से सारा घर गंगा मैया में समा गया था। सुमेर अकेला था।

भगवान पर भरोसा...

- - विभा अतुल, (मैनपुरी/लखनऊ)

एक पुरानी सी इमारत में था वैद्यजी का मकान था। पिछले हिस्से में रहते थे और अगले हिस्से में दवाख़ाना खोल रखा था। उनकी पत्नी की आदत थी कि दवाख़ाना खोलने से पहले उस दिन के लिए आवश्यक सामान एक चिट्ठी में लिख कर दे देती थी। वैद्यजी गद्दी पर बैठकर पहले भगवान का नाम लेते फिर वह चिट्ठी खोलते। पत्नी ने जो बातें लिखी होतीं, उनके भाव देखते , फिर उनका हिसाब करते। फिर परमात्मा से प्रार्थना करते कि हे भगवान ! मैं केवल तेरे ही आदेश के अनुसार तेरी भक्ति छोड़कर यहाँ दुनियादारी के चक्कर में आ बैठा हूँ। वैद्यजी कभी अपने मुँह से किसी रोगी से फ़ीस नहीं माँगते थे। कोई देता था, कोई नहीं देता था किन्तु एक बात निश्चित थी कि ज्यों ही उस दिन के आवश्यक सामान ख़रीदने योग्य पैसे पूरे हो जाते थे, उसके बाद वह किसी से भी दवा के पैसे नहीं लेते थे चाहे रोगी कितना ही धनवान क्यों न हो।

एक दिन वैद्यजी ने दवाख़ाना खोला। गद्दी पर बैठकर परमात्मा का स्मरण करके पैसे का हिसाब लगाने के लिए आवश्यक सामान वाली चिट्ठी खोली तो वह चिट्ठी को एकटक देखते ही रह गए। एक बार तो उनका मन भटक गया। उन्हें अपनी आँखों के सामने तारे चमकते हुए नज़र आए किन्तु शीघ्र ही उन्होंने अपनी तंत्रिकाओं पर नियंत्रण पा लिया।

आटे-दाल-चावल आदि के बाद पत्नी ने लिखा था, "बेटी का विवाह 20 तारीख़ को है, उसके दहेज का सामान।" कुछ देर सोचते रहे फिर बाकी चीजों की क़ीमत लिखने के बाद दहेज के सामने लिखा, " यह काम परमात्मा का है, परमात्मा जाने।" एक-दो रोगी आए थे। उन्हें वैद्यजी दवाई दे रहे थे। इसी दौरान एक बड़ी सी कार उनके दवाखाने के सामने आकर रुकी। वैद्यजी ने कोई खास तवज्जो नहीं दी क्योंकि कई कारों वाले उनके पास आते रहते थे। दोनों मरीज दवाई लेकर चले गए। वह सूटेड-बूटेड साहब कार से बाहर निकले और नमस्ते करके बेंच पर बैठ गए। वैद्यजी ने कहा कि अगर आपको अपने लिए दवा लेनी है तो इधर स्टूल पर आएँ ताकि आपकी नाड़ी देख लूँ और अगर किसी रोगी की दवाई लेकर जाना है तो बीमारी की स्थिति का वर्णन करें।

वह साहब कहने लगे वैद्यजी! आपने मुझे पहचाना नहीं। मेरा नाम कृष्णलाल है लेकिन आप मुझे पहचान भी कैसे सकते हैं? क्योंकि मैं 15-16 साल बाद आपके दवाखाने पर आया हूँ। आप को पिछली मुलाकात का हाल सुनाता हूँ, फिर आपको सारी बात याद आ जाएगी। जब मैं पहली बार यहाँ आया था तो मैं खुद नहीं आया था अपितु ईश्वर मुझे आप के पास ले आया था क्योंकि ईश्वर ने मुझ पर कृपा की थी और वह मेरा घर आबाद करना चाहता था। हुआ इस तरह था कि मैं कार से अपने पैतृक घर जा

रहा था। बिल्कुल आपके दवाखाने के सामने हमारी कार पंक्चर हो गई। ड्राईवर कार का पहिया उतार कर पंक्चर लगवाने चला गया। आपने देखा कि गर्मी में मैं कार के पास खड़ा था तो आप मेरे पास आए और दवाखाने की ओर इशारा किया और कहा कि इधर आकर कुर्सी पर बैठ जाएँ। अंधा क्या चाहे दो आँखें और कुर्सी पर आकर बैठ गया। ड्राइवर ने कुछ ज्यादा ही देर लगा दी थी। एक छोटी-सी बच्ची भी यहाँ आपकी मेज़ के पास खड़ी थी और बार-बार कह रही थी, " चलो न बाबा, मुझे भूख लगी है। आप उससे कह रहे थे कि बेटी थोड़ा धीरज धरो, चलते हैं। मैं यह सोच कर कि इतनी देर से आप के पास बैठा था और मेरे ही कारण आप खाना खाने भी नहीं जा रहे थे। मुझे कोई दवाई खरीद लेनी चाहिए ताकि आप मेरे बैठने का भार महसूस न करें। मैंने कहा वैद्यजी मैं पिछले 5-6 साल से इंग्लैंड में रहकर कारोबार कर रहा हूँ। इंग्लैंड जाने से पहले मेरी शादी हो गई थी लेकिन अब तक बच्चे के सुख से वंचित हूँ। यहाँ भी इलाज कराया और वहाँ इंग्लैंड में भी लेकिन किस्मत ने निराशा के सिवा और कुछ

नहीं दिया।

आपने कहा था, मेरे भाई! भगवान से निराश न होओ। याद रखो कि उसके कोष में किसी चीज़ की कोई कमी नहीं है। आस-औलाद, धन-इज्जत, सुख-दुःख, जीवन-मृत्यु सब कुछ उसी के हाथ में है। यह किसी वैद्य या डॉक्टर के हाथ में नहीं होता और न ही किसी दवा में होता है। जो कुछ होना होता है वह सब भगवान के आदेश से होता है। औलाद देनी है तो उसी ने देनी है। मुझे याद है आप बातें करते जा रहे थे और साथ-साथ पुड़िया भी बनाते जा रहे थे। सभी दवा आपने दो भागों में विभाजित कर दो अलग-अलग लिफ़ाफ़ों में डाली थीं और फिर मुझसे पूछकर आप ने एक लिफ़ाफ़े पर मेरा और दूसरे पर मेरी पत्नी का नाम लिखकर दवा उपयोग करने का तरीका बताया था।

मैंने तब बेदिली से वह दवाई ले ली थी क्योंकि मैं सिर्फ कुछ पैसे आप को देना चाहता था। लेकिन जब दवा लेने के बाद मैंने पैसे पूछे तो आपने कहा था, बस ठीक है। मैंने जोर डाला, तो आपने कहा कि आज का खाता बंद हो गया है। मैंने कहा मुझे आपकी बात समझ नहीं आई। इसी दौरान वहां एक और आदमी आया उसने हमारी चर्चा सुनकर मुझे बताया कि खाता बंद होने का मतलब यह है कि आज के घरेलू खर्च के लिए जितनी राशि वैद्यजी ने भगवान से माँगी थी वह ईश्वर ने उन्हें दे दी है। अधिक पैसे वे नहीं ले सकते। मैं कुछ हैरान हुआ और कुछ दिल में लज्जित भी कि मेरे विचार कितने निम्न थे और यह सरलचित्त वैद्य कितना महान है। मैंने जब घर जा कर पत्नी को औषधि दिखाई और सारी बात बताई तो उसके मुँह से निकला वो इंसान नहीं कोई देवता है और उसकी दी हुई दवा ही हमारे मन की मुराद पूरी करने का कारण बनेंगी। आज मेरे घर में दो फूल खिले हुए हैं। हम दोनों पति-पत्नी हर समय आपके लिए प्रार्थना करते रहते हैं। इतने साल तक कारोबार ने फ़ुरसत ही न दी कि स्वयं आकर आपसे धन्यवाद के दो शब्द ही कह जाता। इतने बरसों बाद आज भारत आया हूँ और कार केवल यहीं रोकी है।

वैद्यजी हमारा सारा परिवार इंग्लैंड में सेटल हो चुका है। केवल मेरी एक विधवा बहन अपनी बेटी के साथ भारत में रहती है। हमारी भान्जी की शादी इस महीने की 21 तारीख को होनी है। न जाने क्यों जब-जब मैं अपनी भान्जी के भात के लिए कोई सामान खरीदता था तो मेरी आँखों के सामने आपकी वह छोटी-सी बेटी भी आ जाती थी और हर सामान मैं दोहरा खरीद लेता था। मैं आपके विचारों को जानता था कि संभवतः आप वह सामान न लें किन्तु मुझे लगता था कि मेरी अपनी सगी भान्जी के साथ जो चेहरा मुझे बार-बार दिख रहा है वह भी मेरी भान्जी ही है। मुझे लगता था कि ईश्वर ने इस भान्जी के विवाह में भी मुझे भात भरने की ज़म्मिदारी दी है।

वैद्यजी की आँखें आश्चर्य से खुली की खुली रह गईं और बहुत धीमी आवाज़ में बोले, " कृष्णलाल जी, आप जो कुछ कह रहे हैं मुझे समझ नहीं आ रहा कि ईश्वर की यह क्या माया है। आप मेरी श्रीमती के हाथ की लिखी हुई यह चिठ्ठी देखिये। और वैद्यजी ने चिट्ठी खोलकर कृष्णलाल जी को पकड़ा दी। वहाँ उपस्थित सभी यह देखकर हैरान रह गए कि "दहेज का सामान" के सामने लिखा हुआ था " यह काम परमात्मा का है, परमात्मा जाने।" काँपती-सी आवाज़ में वैद्यजी बोले, कृष्णलाल जी, विश्वास कीजिये कि आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ कि पत्नी ने चिठ्ठी पर आवश्यकता लिखी हो और भगवान ने उसी दिन उसकी व्यवस्था न कर दी हो। आपकी बातें सुनकर तो लगता है कि भगवान को पता होता है कि किस दिन मेरी श्रीमती क्या लिखने वाली हैं अन्यथा आपसे इतने दिन पहले ही सामान ख़रीदना आरम्भ न करवा दिया होता परमात्मा ने। वाह भगवान वाह! तू महान है तू दयावान है। मैं हैरान हूँ कि वह कैसे अपने रंग दिखाता है।

वैद्यजी बोले ---- एक ही पाठ पढ़ा है कि सुबह परमात्मा का आभार करो, शाम को अच्छा दिन गुज़रने का आभार करो, खाते समय उसका आभार करो, सोते समय उसका आभार करो।

भगवान पर भरोसा रखो, जीवन नैया पार करो।

सूचना

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की कार्यकारिणी की आगामी बैठक दिनांक 27 दिसंबर 2020 को बाबू ओंकारनाथ चतुर्वेदी स्मृति सार्वजनिक धर्मशाला, 127/558, डब्लू-1,साकेत नगर, कानपुर (उ. प्र.) - 208014 में आहूत की जा रही है। आपसे सविनय अनुरोध है कि इस अवसर पर पधार कर समाज हित में सामाजिक कार्य में अपना बहुमूल्य योगदान देकर अनुग्रहित करें। सभी कार्यकारिणी सदस्यों से अनुरोध है कि अपने आगमन की पूर्व सूचना आवश्यक रूप से दें। जिससे आपके आवास की सुगम व्यवस्था की जा सके।

मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी, मंत्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
मो. 9871170559

कोरोना वैश्विक महामारी और हमारी भूमिका

- डॉ. राकेश चंद्र चतुर्वेदी, मथुरा

आज कोरोना वायरस ने विश्व की अर्थव्यवस्था से लेकर हर क्षेत्र में दुनिया को झकझोर दिया है। अगर हम सामाजिक कार्यकर्ता स्वयं को मानते हैं तो हमारी जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का यह वाक्य मुझे याद आ रहा है कि हमें अंत्योदय के सिद्धांत को अपनाना होगा अर्थात हमें अंतिम व्यक्ति तक पहुंचना होगा। इसके लिए समाज की एक वर्ग को आर्थिक मदद के लिए आगे आना होगा तथा दूसरे वर्ग एवं शारीरिक मानसिक मेहनत अधिक करनी पड़ेगी। तभी हमारा समाज संपन्न समाज होगा। जैसा कि सिख समाज, मारवाड़ी समाज आदि में होता है। तब ही वह समाज अपने आप में संपन्न होता है। इसके लिए हमें अपनी शाखा सभा का सहयोग लेना होगा। अपने नगर के ऐसे लोगों को चिन्हित करना होगा, जिनके रोजगार पर महामारी का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा है। इनसे आर्थिक मदद लेकर हम दूसरे लोगों की मदद कर सकते हैं। सही मायने में समाज के प्रति सही भूमिका हमारी तभी होगी समाज के ऐसे लोगों का पता करके, जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं विभिन्न तरीकों से सहायता करना होगी। उनके रोजगार में सहयोग करके तथा सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं का लाभ दिलवाकर जैसे वृद्धावस्था पेंशन, विधवा पेंशन, राशन कार्ड, बच्चों को निशुल्क पाठ्य पुस्तकों को उपलब्ध करवाना तथा कॉलेज की फीस में सहायता की जा सकती है। इसके साथ ही अगर समाज के लोगों के स्वाभिमान को चोट पहुंचाए बिना हमने मदद की तो हमारा समाज के प्रति बड़ा योगदान होगा। दूसरी और हम उन सम्मानीय बुजुर्गों से मिलकर उनका हाल चाल पूछ कर भी उनकी मदद कर सकते हैं, जिनके पुत्र या पुत्री अन्य नगरों में रहते हैं या सर्विस करते हैं। इस वैश्विक महामारी में हम उनको मनोवैज्ञानिक रूप से संतुष्ट कर सकते हैं। फोन से भी कुशल क्षेम पूछ सकते हैं। अंत में मैं कहना चाहूंगा देश समाज हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखे।

कर्म ही धर्म

- नीरू चतुर्वेदी, फिरोजाबाद

जै दृढ़ राखे धर्म को, तै राखै करतार इतिहास में उल्लेखित उपयुक्त पंक्तियों से वह पूर्णतः अभिभूत हूँ। जिसका अर्थ है जो इंसान अपने धर्म का सर्वदा पालन करता है उसकी रक्षा स्वयं भगवान तारणहार करते हैं। मैं ब्राह्मण कुल व चतुर्वेदी समाज में जन्मी साधारण सी बेटी/ बहू हूँ, लेकिन एक बहुत ही आवश्यक विषय पर लिखने को प्रेरित हुई हूँ। हमारा माथुर चतुर्वेदी समाज जो ब्राह्मण जाति धर्म/वर्ग में आता है। संभवतः इसी धर्म का पालन करने हेतु हमारा जन्म हुआ है। किंतु यह कलयुग का अति प्रभाव कहे या प्रदत्त संस्कारों की अवहेलना कि हम ब्राह्मण जाति के लोग ही अपने धर्म की पालना करते हुए नहीं देखे जा रहे हैं। यह अति सोचनीय विषय है कि चौबों के परिवारों में बहुत से इक्के दुक्के परिवार ही बचे हैं। जहां पुरुष युवा जनेऊ संस्कार होने के बाद अजीवन उसे धारण करते हैं व और उसके नियमों का पालन करते हैं, जबकि जनेऊ पहनने के धार्मिक व वैज्ञानिक लाभ सिद्ध हैं। हमारे ही समाज में आमतौर पर दृष्टिगत होता है कि धन की प्रचुरता व संपन्नता होते ही लोग दिखावे में विश्वास के मार्ग का अनुसरण करते हुए मदिरापान, मांसाहार आदि का सेवन करने को अपने विचारों की आधुनिकता समझने लगते हैं। बहुत ही चिंतनीय है कि अब हमारे समाज की बहू बेटियां भी परिवार के पुरुषों का अनुसरण करने में पीछे नहीं है। हम अपने बच्चों को पुस्तक की उच्च शिक्षा देकर उन्हें डॉक्टर, इंजीनियर, आईएएस, आईपीएस बनाने में तो सफल हो गए, लेकिन उन्हें अपने संस्कारों व धर्म का पालन कट्टरता से करवाने में विफल हो रहे हैं। आधुनिकता की इस दौड़ में इन दुर्व्यसनों में लिप्त होने से हमारे धर्म की अवज्ञा तो हो ही रही है साथ ही इसके दुष्परिणामों से भी हम वंचित नहीं हैं। जो कि शारीरिक कष्ट, परिवार में मर्यादा का हनन, पति पत्नी संबंधों में विछोह तथा सामाजिक छवि खराब होना आदि रूपों में परिलक्षित हो रहे हैं। यह पंक्ति इस संदर्भ में बिल्कुल उपयुक्त है :

गाड़ी में ब्रेक ना हो तो दुर्घटना निश्चित है,
और जीवन में अगर संस्कार ना हो तो पतन निश्चित है।।

हमने अपने बुजुर्गों को गुरुओं से भी सुना है :

जैसा धन वैसा अन्न, जैसा अन्न वैसा तन, जैसा तन वैसा मन

अतः सात्विकता और धर्म के मार्ग पर चलकर धन कमाए एवं शांति सुख समृद्धि उपहार में पाएं। मेरा समाज के वरिष्ठ जनों व सभी प्रबुद्ध परिवार की भावी पीढ़ी के पालनहारों से करबद्ध निवेदन है कि हम चतुर्वेदी समाज में जन्म लेने वाले लोगों को ईश्वर से आशीर्वाद से इस धर्म में जन्मे हैं। अपनी भावी पीढ़ी को शिक्षित करने के साथ ही संस्कारवान बनाने तथा उसके भविष्य को उज्ज्वल बनाकर समाज की छवि को सुधारने के लिए संकल्पित हो कटिबद्ध हो।

कोविड में कार्डियक केअर

-डॉ हेमन्त चतुर्वेदी, हृदय रोग विशेषज्ञ
इटरनल हॉस्पिटल जयपुर।

जैसा कि अब हम सभी जानते हैं कि कोरोना एक वैश्विक महामारी है जो की हर जगह हर तबके के लोगो को प्रभावित कर रही है। यहाँ एक खास बात ये देखने को मिल रही है कि अक्सर युवाओं में ये इतनी गंभीर लक्षण नही दिखा रही। इसके ठीक उलट बुजुर्गों में और खासकर की हायपरटेंशन, हार्ट व डायबिटिक मरीजो में इसके गंभीर लक्षण देखने को मिल रहे हैं। जिसका कारण भी काफी सामान्य है। अक्सर बुजर्गों में हार्ट व डायबिटीज वाले मरीजों में रोग प्रतिरोधक क्षमता अन्य व्यक्तियों के मुकाबले कम होती है। उनमें किसी भी तरह के फ्लू या वायरल निमोनिया होने की रिस्क काफी ज्यादा होती है।

यहाँ कुछ बातें महत्वपूर्ण है जिन्हें हार्ट के मरीजों को जानना काफी आवश्यक है जैसे-

1. कोरोना वायरस का इंफेक्शन हार्ट के मरीजों के लिए काफी खतरनाक साबित हो सकता है। यह कई तरीके से हार्ट को प्रभावित कर सकता है जैसे कि इस वायरस के खिलाफ जो एंटीबाडी शरीर मे विकसित होती है वो हार्ट की मांसपेशियों पर प्रभाव डाल सकती है जिससे हार्ट की पम्पिंग क्षमता कम होजाती है एवं मरीज को सांस लेने में तकलीफ ,पैरों में सूजन पेट मे आफरा, खांसी ,जल्दी थकान जैसे हार्ट फेल्योर के लक्षण आजाते हैं।
2. कभी कभी कोरोना के इंफेक्शन से छाती में काफी तेज दर्द की भी शिकायत हो सकती है जिसमे कार्डिएक एंजाइम बढ़ जाते हैं ,ऐसा अक्सर बढ़े हुए स्ट्रेस के कारण हार्ट के एक खास भाग की मांसपेशियों में सूजन के कारण होता है जिसे स्ट्रेस कार्डिओमायोपैथी भी कहते हैं।
3. आजकल कोरोना महामारी का खौफ इतना ज्यादा व्याप्त होचुका है कि हर तरफ सभी लोग उसी के बारे में जानने को उत्सुक रहते हैं। साथ ही उसके बारे में रोज़ नए पॉजिटिव केस की बढ़ती संख्या ,अपने नजदीकी रिश्तेदार के कोरोना होने और कोरोना के कारण बढ़ती हुई मृत्यु दर से ज्यादातर लोग बेचैन होजाते है। वो हार्ट की बढ़ती धड़कनों को महसूस करने लग जाते है जिसे पेलपिटेशन कहते हैं। कई बार हार्ट की धड़कनें असामान्य रूप से कम या ज्यादा हो सकती है जिसे अरिधमिया कहते है।
4. कोरोना से बचाव के लिए या इलाज़ के लिए आजकल कुछ दवाएं दी जारही है जिनके बारे में कहा जाता है कि इनसे हार्ट को खतरा है। यहाँ ये जानने वाली बात है कि कुछ दवाएं जैसे खासकर दो दवाएं हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन व एज़ीथ्रोमयसिन है इनका उपयोग काफी सावधानी पूर्वक करना चाइये। ICMR ने बचाव के लिए

हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन दवा खासकर स्वस्थ्यकर्मियो या फ्रंट लाइन वर्कर जिन्हें कि कोरोना पोसिटीव मरीजो के सम्पर्क में आने का रिस्क सबसे ज्यादा है ,उन्हें इस दवा का सेवन की सलाह दी गयी है पर वो भी डॉक्टर के परामर्श एवम उनकी निगरानी में। इन दोनों दवाओं के अनियंत्रित व अनियमित मात्रा में लेने से हार्ट की धड़कनो में गड़बड़ी हो सकती है एवं ये जानलेवा हो सकता है।

5. हायपरटेंशन के मरीजो में एक भ्रम की स्थिति आगयी थी कि कुछ एन्टी हाइपरटेंशन की दवाएं लेने से मरीजों में कोरोना का इंफेक्शन होने का रिस्क बढ़ जाता है। पर इसमे कोई सत्यता नही है। कई जानी मानी विश्व विख्यात कार्डियोलॉजी की संस्थाओं के विस्तृत शोधों में ये प्रमाणित हो चुका है कि ये बिल्कुल गलत है और कोई भी एन्टी हाइपरटेंशन की दवा कोरोना का इंफेक्शन रिस्क नही बढ़ाती। इसलिए एन्टी हाइपरटेंशन दवा समय पर लेनी जरूरी है।
6. हार्ट फेल्यर के मरीजो के अधिकतर लक्षण कोरोना के इंफेक्शन से मिलते जुलते हैं। जैसे कि सांस भरना, सूखी खांसी आना। इससे कई मरीज भ्रमित होजाते हैं कि कल को हमें कोरोना तो नही होगया। पर यह पर कुछ महत्वपूर्ण व आसान बातें हैं जिनसे ये बताया जा सकता है कि ये हार्ट फेल्योर के लक्षण है या कोरोना के। सबसे पहली बात की किसी कोरोना मरीज़ से संपर्क की बात, या हाल ही में ऐसी किसी जगह की यात्रा जहाँ कोरोना इंफेक्शन काफी ज्यादा फैला हुआ हो या बुखार आना साथ ही गला खराब होना ,झुकाम होना अगर इन सब प्रश्नों का जवाब हां में है तो ये कोरोना इंफेक्शन हो सकता है। अगर इनमे से कोई भी बात नही है तब हार्ट फेल्यर के लक्षण हो सकते हैं।
7. हार्ट के मरीज़ों को इस कोविड समय मे सबसे महत्वपूर्ण बचाव का जो कार्य करना चाहिए वो है योगाभ्यास। प्राणायाम, जलनेति व कुछ हल्के श्वास क्रिया के आसन जिनसे न केवल हायपरटेंशन व डायबिटीज नियंत्रण में रहते

हैं बल्कि फेफड़ों की क्षमता भी बढ़ जाती है। एवं कोरोना जैसे वायरल इंफेक्शन से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है।

8. अक्सर हार्ट के मरीज़ लॉक डाउन का मतलब समझते है सब एक्टिविटी बन्द कर दो। घर मे बन्द हो जाओ। ये सही है कि कोरोना के संक्रमण छूने से फैलने के कारण हमें सलाह दी जाती है कि अनावश्यक बाहर न निकलें। लर इसका ये मतलब बिल्कुल नहीं है कि हम अपने शरीर का भी लॉक डाउन करलें। डॉक्टरों द्वारा बताई हुई व्यायाम नियमित रूप से करते रहना चाइये जिससे शरीर मे गतिशीलता बनी रहती है। पैरों की नसों में रक्त का प्रवाह बराबर चलता रहता है। अगर ये व्यायाम बन्द कर दिया जाएगा तो पैर की नसों में खून के थक्के जमा हो सकते हैं जिनसे DVT बीमारी हो सकती है।
9. एक आखरी बात जो मरीजों में देखने को मिल रही है कि कोविड के डर के कारण अक्सर लोग अपने हार्ट संबंधित बीमारी के लक्षणों को छुपा रहे हैं क्योंकि उन्हें डर है कि आजकल सभी अस्पतालो में कोरोना के मरीजों का इलाज होता है और अस्पताल कोरोना के इंफेक्शन का एक प्रमुख स्त्रोत हो सकते हैं। पर यहाँ ये जानना आवश्यक है कि अधिकतर हॉस्पिटल में कोरोना के मरीजों के लिए अलग से व्यवस्था है और सामान्य बीमारियों के इलाज की अलग व्यवस्था। इसलिए घबराने जैसी कोई बात नहीं। लक्षणों को समय से न बताने से अधिकतर केसेस में मरीज़ देरी से हॉस्पिटल पहुंचते है जिनमे हार्ट अटैक के कई दिन बाद आने पर मरीज़ के हार्ट की पम्पिंग क्षमता काफी कम रह जाती है साथ ही कॉम्प्लिकेशन काफी बढ़ जाते है जिससे उन्हें बचाया जाना मुश्किल होजाता है। इसलिए समय पर बिना डरे अपने लक्षणों को अपने कार्डिओलॉजिस्ट के साथ साझा करें।

अंत मे यही कहना चाहूंगा कि जैसा आप जान चुके हैं कि हार्ट के मरीज़ क्यों और किस तरह कोरोना के इंफेक्शन के लिए हाई रिस्क पर होते हैं इसलिए खास तौर पर सोशल डिस्टेनसिंग का पालन करें, कही भी जाएं तो मास्क कर प्रयोग करें, बेवजह जगहों को छूने से बचें व हाथो को साबुन या सैनिटाइजर से साफ रखें।

मानसिक अस्वस्थता, कोरोना काल का प्रभाव

- सुप्रीति चतुर्वेदी, (लखनऊ)

पिछले 15/16 वर्षों में अपने देश में एक बीमारी धीरे धीरे महामारी का रूप ले रही है। मानसिक अस्वस्थता अभी तक विकसित देशों की बीमारी हुआ करती थी। पर अब अपने बदलते हुए रहन सहन ने हमें अपने परिवार से दूर कर दिया है। इसका दुष्परिणाम आज हमारे सामने परिवार के विघटन, आत्महत्या आदि विनाशकारी रुपों में सामने आ रहा है। अभी तक अलग अलग स्तर पर किये गये अध्ययनों में यह स्पष्ट रुप में सामने आ रहा है कि मौजूदा हालात भविष्य के किसी बड़े खतरे का संकेत दे रहे हैं। कोरोना महामारी ने इन आंकड़ों में इजाफा ही किया है। महामारी के कारण पैदा हुए भय ने हमारे मन मस्तिष्क को सीधे तौर पर प्रभावित किया। लाकडाउन के दौरान कुछ दिनों तक लोग अपने घरों में बंद होकर सब कुछ ठीक होने का इंतजार करते रहे। बाजार, रोजगार,समाज सब पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। कंटेनमेंट जोन, कोविड हास्पिटल, आइसोलेशन सेंटर, होम आइसोलेशन आदि शब्दों ने कमोबेश हर व्यक्ति की मानसिक चेतना को प्रभावित किया।

लाकडाउन के दरमियान जब सब कुछ रुका हुआ था और लोग अपने घरों को लौटने की जद्दोजहद में थे। तब कुछ दिनों तक परिवार के भूले बिसरे सदस्यों के बीच सोशल मीडिया की मदद से आपसी नजदीकियां भी बढ़ी। लेकिन हमेशा घर के अंदर मौजूदगी ने रिश्तों में टकराव की स्थिति भी पैदा की। इन दिनों घरेलू हिंसा के मामलों में दर्ज की गई बढ़ोतरी इसका प्रमाण रही। इस महामारी की वजह से कई लोगों ने अपनी आजीविका से हाथ धोया। वर्षो से जिस परिवेश में रह रहे थे, अचानक उसे छोड़ना पड़ा। बीमारी में स्वजनों एवं प्रियजनों को खोना पड़ा। इन परिस्थितियों ने लोगों के मन मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डाला है। आई आई एम अहमदाबाद के एक अध्ययन में यह आशंका व्यक्त की गई है, कि आने वाले समय में मानसिक अस्वस्थता एक नये संकट का स्वरुप ले सकती है। लाकडाउन से अनलाक के बीच शहर दर शहर आत्महत्याओं की बढ़ती घटनाएं इसकी एक बानगी पेश कर रही हैं।

इंडियन साइक्याट्री सोसायटी (आई. पी. एस.) की ओर से किए गए एक हालिया सर्वेक्षण के अनुसार लाकडाउन लागू होने के बाद से मानसिक बीमारियों के मामलों में 20 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है। औसतन हर पांचवां भारतीय इससे प्रभावित हुआ है। चेतावनी दी गई है कि देश में हाल के दिनों में अलग अलग कारणों से मानसिक संकट का खतरा पैदा हो रहा है। इसमें नौकरियां खत्म होने, आर्थिक तंगी बढ़ने, सामाजिक व्यवहार में बदलाव तथा अनहोनी की आशंका के कारण मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। एक अध्ययन में यह भी कहा गया

है कि जिन लोगों की मानसिक स्थिति अगले दस बरसों बाद बिगड़नी थी वह इस अवधि में ही बिगड़ गई। मानसिक अवसाद से बाहर आए, कई लोग एक बार फिर पुरानी स्थिति में लौट गए हैं।

कोरोना संक्रमण के दौर में अलग अलग आयु वर्ग पर किए गए अध्ययन में यह भी पाया गया है कि हर आयु वर्ग और लिंग पर इसका असर हुआ है। बच्चों के स्वभाव में परिवर्तन हुए हैं। वृद्धजन इस बीमारी को लेकर सबसे ज्यादा डरे हुए हैं। हल्की सर्दी खांसी एवं बुखार में लोग खुद कोविड – १९ का मरीज मान रहे हैं। युवा वर्ग कैरियर को लेकर डरा हुआ है। वहीं नौकरीपेशा व्यक्ति अपने और परिवार के भविष्य को लेकर परेशान हैं। बच्चे घर पर हिंसा एवं तनाव के गवाह बन रहे हैं।

कोरोना महामारी ने दुनिया को कई सबक भी दिए। परिवार की महत्ता इस काल में अकाट्य सत्य के रूप में सामने आई। जिन परिवारों में एकल परिवार की व्यवस्था थी, उनके अनुपात में सामूहिक परिवार में मानसिक अस्वस्थता के मामले कम सामने आये हैं। जो व्यक्ति एकल होते हुए भी सामाजिक तौर पर जुड़े रहे उन्होंने भी इन परिस्थितियों से पार पाया है। होम आइसोलेशन के मरीजों में एक बड़ी संख्या मानसिक अस्वस्थता के लक्षण वाले मरीजों की सामने आ रही है। इस तरह के मरीज सोशल मीडिया पर एक्टिव रह कर अकेलेपन के दर्द एवं डर को दूर रख सकते हैं। इसके बावजूद भी अगर लगता है कि अवसाद में जा रहे हैं तो मानसिक चिकित्सक की सलाह लेने में देर न करें। इस माहौल में समाज की एक बड़ी जिम्मेदारी है कि इस तरह के मरीजों के लगातार संपर्क में रहें, उनके सोशल मीडिया की पोस्ट पर गम्भीर दृष्टिकोण रखें और इस तरह के मरीजों के साथ हंसी मजाक की पोस्ट सांझा करते रहें। समाज की जिम्मेदारी बनती है कि अगर महसूस होता है कि कोई सदस्य अवसाद में जा रहा है तो तुरंत सदस्य के परिजनों से संपर्क कर उन्हें सूचित करें क्योंकि अवसाद ग्रस्त व्यक्ति सबसे पहले अपने परिवार से कटता है। परिजनों एवं स्वयं मरीज को यह बताया जाना बहुत जरूरी है कि अवसाद ग्रस्त व्यक्ति पागल नहीं होता, अतः मानसिक चिकित्सक के पास जाने में कोई बुराई नहीं है। प्राथमिक स्थिति में चीजें आसानी से ठीक की जा सकती हैं।

आज की भागदौड़ और चुनौतियों भरी जीवनशैली के बीच मानसिक स्वास्थ्य को हमें अपनी प्राथमिकता में लाना होगा। हर आयु वर्ग को यह समझने और समझाने की जरूरत है कि धैर्य के साथ बगैर घबराए परिस्थितियों का सामना करें। खुद को मानसिक तौर पर सर्वसमर्थ बनाये रखें एवं निराशा पर विजय प्राप्त करें।

अपील

माथुर चतुर्वेदी समाज 60000 की आबादी के साथ भारत की जन संख्या का एक अत्यंत सूक्ष्म अल्पसंख्यक समुदाय है। अपने संस्कार, विद्या, वाक्पटुता, ऊर्जा, लगन क़े नैसर्गिक गुणों के कारण जो भी कार्य करते हैं उसमें अपनी निपुणता और दक्षता की छाप छोड़ देते है।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का कार्य के आधार पर विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्टता प्राप्त माथुर चतुर्वेदी समाज क़े सम्मानित बुज़र्गों तथा युवाओं को चिन्हित कर सार्वजनिक रूप से सम्मानित करने का कार्यक्रम है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जैसे शिक्षा (शिक्षक/ शिक्षण संस्था), शासकीय सेवा – प्रशासन, सेना, पुलिस , अनुसंधान, राजनीति, चिकित्सा , मीडिया , समाज सेवा, खेल, नृत्य, संगीत, कला, न्याय व्यवस्था, विधि विशेषज्ञ, कला, साहित्य, समाज सेवा, उद्योग/व्यवसाय, जातीय संस्कार, इतिहास सरंक्षण, नागर विमानन आदि अनगिनत क्षेत्रों में प्रदेश/ राष्ट्रीय/ अंतराष्ट्रीय क्षेत्र में कोई स्थान प्राप्त किया हो। सर्वोच्च स्थान की प्राप्ति पर प्रत्येक व्यक्ति को जो संतुष्टि अपने माँ – बाप के तथा सहोदरों की प्रशंसा प्राप्त होती है, वह अमूल्य है। श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का सदैव यह प्रयास रहा है कि समाज के ऐसे सभी बाँधवों को सम्मान करके स्वयं को भी गौरानवित करे। इस श्रृंखला को आगे ले जाते हुए महासभा सभी बांधवों से आवाहन करती है क़ि स्वयं क़े संक्षिप्त परिचय के साथ अपने किसी बांधव को यदि आप इस श्रेणी में समझते है तो उनका विवरण निम्न प्रारूप में मेल आईडी पर प्रेषित करें :

१. नाम
२. आयु
३. मूल निवास, वर्तमान पता, मो. न., मेल आई डी
४. शिक्षा
५. क्षेत्र विशेष जिसमें उपलब्धि प्राप्ति की है उसका। संक्षिप्त विवरण (अधिकतम २५० शब्दों में)
६. उपलब्धि प्राप्ति का वर्ष

(शासन या अन्य माध्यम से मिले सम्मानों का उल्लेख भी करें)

महासभा अपनों के सम्मान का यह पुनीत कार्य निरंतर जारी रखेगी।

मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी, मंत्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
munindra.chaturvedi2@gmail.com

प्राचीन तीर्थ : सूकर क्षेत्र- सोरों जी

- कैलाश चतुर्वेदी, कासगंज

'' प्रथिव्यां यानी तीर्थानि, आसमुद्र सरांसि च।
कुव्जाम्रकं प्रशंसन्ति, सदा मदुभाव- भाविता।
तस्मात कोटिगुणं पुण्यं, सौकरें तीर्थमुमम।।''

भगवान श्री वराह जी भगवति पृथ्वी से कहते हैं कि सब तीर्थो से करोडों गुना अधिक पुण्यप्रद है मेरा सूकर क्षेत्र। सूकर क्षेत्र(सोरों) भारतभूमि का आदितीर्थ है। यह भूमि अत्यन्त पावन तपस्थली एवं मोक्षस्थली के रूप में प्रसिद्व है। सूकर क्षेत्र की महिमा का मंण्डन भारतीय संस्कृति को प्रतिबिम्बित करने वाले पौराणिक ग्रंथों में किया गया है। पुराणों के अनुसार सृष्टिरचना के आरम्भ से ही भगवान श्री वराह द्वारा पृथ्वी की स्थापना के साथ ही साथ यह पावन तीर्थ स्थापित हो गया। सूकर क्षेत्र(सोरों) मथुरा- बरेली राजमार्ग पर कासगंज से 15 किमी. पर स्थित है। सूकर क्षेत्र हिन्दू संस्कृति के सप्त विशिष्ट क्षेत्रों में से एक है-(1.) सूकर क्षेत्र (उत्तर प्रदेश) (2.) कुरूक्षेत्र (हरियाणा) (3.) हरिहर क्षेत्र (सोमपुर) (4.) प्रभास क्षेत्र (बैराबल) (5.) रेणु का क्षेत्र (मथुरा) (6.) मृगुक्षेत्र (भरूच) एवं (7.) पुरूषोम क्षेत्र (जगन्नाथपुरी)। इसी प्रकार भारत के प्राचीन वट वृक्षों की शास्त्रीय गणना अनुसार सूकर क्षेत्र सोरों जी में एक प्राचीन वट वृक्ष है। जिन वट वृक्षों का उल्लेख शास्त्रों में मिलता है। उनमें गृद्ववट (सूकरक्षेत्र) अक्षय वट (इलाहाबाद) सिद्ववट (उज्जैन) और बंशीवट (मथुरा) है। सूकर क्षेत्र को सौकरव, सौकर, वराहतीर्थ व मोक्षतीर्थ भी कहते हैं।

'' यत्र स्थाने मया देवी, उद्धृताऽसि रसालात्।
यत्र भागीरथी गंगा, मय सौंकरवे स्थिता।।''

बराहपुराण में सूकरक्षेत्र की भौगोलिक स्थिति का वर्णन है। भगवान बराह देवी पृथ्वी से कहते हैं, जहॉ मैनें तुम्हें रसातल से उद्धृत करके स्थापित किया, जहॉ भागीरथी गंगा है वहीं मेरा सूकरक्षेत्र स्थिति है। शास्त्रों में सूकर क्षेत्र को मुक्ति का सर्वश्रेष्ठ स्थल बताया है। गया में जल में, वाराणसी में जल व थल में, जबकि सूकर क्षेत्र में जल,थल व नभ तीनों प्रकार से मुक्ति होती है- 'गयायाम, जले मुक्ति, वाराणस्याम च जले थले। जले थले च अन्तरिक्षे त्रिधा मुक्तिः तु सूकरे।।''सूकर क्षेत्र में अस्थि विसर्जन का बहुत ही चमत्कारिक महत्व है- सूकर क्षेत्र स्थित कुण्ड में डाली गयीं अस्थियां मात्र तीन दिन में इस क्षेत्र के प्रभाव से रेणु रूप में परिवर्तित हो जाती है- '' प्रक्षिप्त अस्थि वर्गः तु रेणुरूप प्रजायते। त्रिदिनान्ते वरारोहे मम क्षेत्र प्रभावतः।''

तपस्या करने के लिये सूकर क्षेत्र से बडा कोई तीर्थस्थल ही नहीं है। मनुष्य वर्षो तक अन्यत्र किसी तीर्थ पर तपस्या करके जो फल प्राप्त करता है वही फल सूकर क्षेत्र में मात्र आधे प्रहर में प्राप्त हो जाता है। ''शष्टि वर्ष सहस्त्राणि योऽन्यत्र कुरते तपः। तत्फलम् लभते देवी प्रहराद्र्वेन च सूकरे।।''सूकर क्षेत्र सोंरों में देष के विभिन्न प्रातों से सैकडों तीर्थयात्री '' हरिपदी गंगा' में स्नान करनें और अपने मृतक परिजनों की अस्थियों के विसर्जन एवं पिण्डश्राद्व कर्म के लिए पधारते हैं।

'' सकल तीरथन अग्रनी, इस सौकरव प्रदेश।
तीनहुतापन हरत षुचि, मंगलधाम विशेष।।
क्षेत्र सौकरव दरश करि, पुनः पावत नर देह।
शान्ति-संपदा सुख लहत, धन जन संजुत गेह।।''

सब मनोरथों को पूर्ण करने के कारण सूकरक्षेत्र की महिमा अग्रगण्य है। इस प्रकार पग-पग पर तीर्थो का आभास करानें वाली, पत्ते पत्ते पर देवताओं के निवास की अनुभूति कराने वाली, पितरों व कुलदेवताओं को शान्ति प्रदान करने वाली, भगवद्कथा, भजन-कीर्तन तथा यज्ञादि के मंत्रों से गुजायमान भगीरथी गंगा व वृद्वगंगा को अपने आंचल में रखने वाली, वेदपाठी, ज्योतिषी, कर्मकाण्डी विद्वानों को पल्लवित व पोषित करने वाली, मंदिरों की नगरी सूकरक्षेत्र सोरों जी कोटिशः नमन एवं वंदन करने योग्य पवित्रम पुण्यभूमि है। इसके दर्शन मात्र से ही पाप नष्ट हो जाते हैं तथा व्यक्ति मोक्ष प्राप्त करके परमपद का अधिकारी हो जाता है। स्कन्दपुराण के अनुसार '' सूकर क्षेत्र'' के समान तीर्थ न तो भूतकाल में हुआ और न ही भविष्य में होगा-

'' सूकरक्षेत्र समः तीर्थम न भूतो न भविष्यति।''
'' ऊँ श्री गंगा देव्यै नमः''

अपील : बंधुवर पालागन, हर्ष का विषय है कि आपकी लोकप्रिय संस्था श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा अपने शत वर्ष पूर्ति पर विभिन्न कार्यक्रमों के साथ एक स्मारिका प्रकाशन भी करने जा रही है। इस कार्य हेतु सभापति डा प्रदीप जी ने एक उप समिति का भी गठन किया है। अतःआपसे सविनय निवेदन है कि महासभा इतिहास से सम्बंधित जो भी जानकारी हो यथाशीघ्र उपलब्ध कराने की कृपा करें। महासभा यात्रा के उल्लेखनीय एवं कीर्तिपरक आलेख की भी हमें आपसे अपेक्षा है। इसके साथ ही हम समाज के व्यावसायिक संगठनों के विज्ञापन एकत्र कराने में आपके अभीष्ट सहयोग की कामना करते हैं। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि समाज हित में आपका सहयोग पूर्व की भांति स्मारिका प्रकाशन में भी अवश्य मिलेगा।

भरत चतुर्वेदी, शशांक चतुर्वेदी, मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी

व्यर्थ डाटा डिलीट कर दिया जाय

– जिज्ञासा चतुर्वेदी,
कक्षा 11, लखनऊ

एक दिन मेरा
मोबाइल चलते-चलते
धीरे चलने लगा
तो कभी हैंग होने लगा
एक जानकार ने बताया
इसे हल्का करना जरूरी है
फोन ओवरलोड हो गया है
इसलिए चलने में दिक्कत करता है
मैंने व्यर्थ की तस्वीरें, फाइलें, डाटा डिलीट कर दिये
चमत्कार सा हो गया
फोन चलने ही नही, दौड़ने लग गया
फोन क्या चलने लगा
मस्तिष्क का इंजन दौड़ने लगा
मन में आया
यदि अनपेक्षित सामग्री मिटाने से
एक निर्जीव फोन तीव्र गति से
चल सकता है
तो मन में भरी हुई, जमी हुई,
अनावश्यक यादें,
अप्रिय घटनाऐं, बैर, विरोध की
भावनाए आदि-आदि
सारी नकारात्मकताऐं मिटा दी
जायें,
भुला दी जायें
तो आत्मा का पट सद्-विचारों,
सकारात्मकताओं के लिए
खाली हो जाय,
जीवन बहुत छोटा है
क्यों न खुल कर आनन्द से जीया जाय
व्यर्थ डाटा डिलीट कर दिया जाय

दहन

– मोहन (सूर्य कान्त) चतुर्वेदी
(पुरा /टूण्डला /रिसड़ा)

बड़ा ही जोश देखा
पिछले दशहरे पर
मगर इस बार
रावण का दहन
बड़ा ही मुश्किल है ।
सुना है मेघनाद
शिकारे कोविड मिला है
रावण भी क्वारंटाइन
रहता है
भला बिन युद्ध के
दहन रावण का
कैसे हो ?
सेना भी शंकित है
रावण के कुछ सैनिक भी
कोविड के शिकार मिले हैं
पूर्व के युद्ध
बिना मास्क के किये हैं
राम के सैनिक भी
दुविधा में हैं लगते
करें वो युद्ध या
क्वारंटाइन हो जायें ?

भला बिन युद्ध के
दहन रावण का
कैसे हो ?

ज़रा सी भूल क्या
बिन मास्क लगाये
युद्ध की कर डाली
क्या अब
इतिहास भी बदलेगा ?

इस बार दशहरे पर
मर्यादा पुषोत्तम
श्री राम को
यही चिन्ता
दुविधा में डाले है
भला बिन युद्ध
दहन रावण का
कैसे हो ?

कितने सफेद झूठ वे बोलते रहे

–महेंद्र चतुर्वेदी, (चंद्रपुर/आगरा)

कितने सफेद झूठ वह बोलते रहे,
कैसे गढ़ें कहानियां बस सोचते रहे।
खुद के लिवास पर नाजाने कितने दाग थे,
ताउम्र दूसरों पर ही कीचड़ उछालते रहे।
दोनों के नाम सूर्य के पर्यायवाची थे पर,
इतना फर्क क्यों है लोग सोचते रहे।
एक तो प्रकाश के पर्याय बन जिए,
और दूसरे सिर्फ अंधकार बांटते रहे।
शिक्षा के नाम पर तो अंगूठा छाप थे,
कितने पढ़े लिखों ज्ञान बांटते रहे।
शेरों की खाल में थे गीदड़ छिपे हुए,
ऐसी चली बयार सारे भेद खुल गए।
बस्ती ने भूल से उन्हें मसीहा चुन लिया,
बस्ती उजड़ती रही वे देखते रहे।
आतिश परस्त हो तुम उनको खबर न थी,
घर उनके जल रहे थे तुम देखते रहे।
अब आज हाल यह है कोई पूछता नहीं,
आंखों ने हाल कह दिया पर होंठ चुप रहे।
कितने सफेद झूठ वे बोलते रहे....

चतुर्थ पुण्य स्मरण

स्व. श्री श्रीनाथ चतुर्वेदी

एडवोकेट / पूर्व पार्षद नगर पालिका मैनपुरी उ. प्र.

(1939 - 2016)

पुत्र स्व. श्री ओंकारनाथ "कानूनगो कक्का" - श्रीमती कुंतीदेवी "नई चाची" (मिश्राना, मैनपुरी)

सिद्धांतों पर अडिग रहकर जिन्होंने ना छोड़ा कभी अपने आदर्शों और अपनों का साथ, ऐसे थे हमारे हम सबके शक्तिपुंज ओजस्वी वक्ता कलम व वाणी के धनी परम श्रद्धेय श्री श्रीनाथ

आपको ना भूल पाएंगे आपकी बातें यादें और आपके साथ बिताए पल।
हर पल याद आएंगे साथिया की मौजूदगी का हर पल एहसास कराएंगे।

श्रद्धावनत

अनुज वधू	:-	त्रिलोकीनाथ- श्रीमती आशा चतुर्वेदी
भतीजे-बहू	:-	त्रिदेव-कीर्ति, नवेंदु, अनुव्रत- सुलभा
नातिन/ धेवतियाँ	:-	अनिका, शुचि, श्रीया, अद्विता, अक्षदा,
भतीजियां-दामाद	:-	निवेदिता- मनोज (कानपुर), नंदिता-अशोक (ग्वालियर), अणिमा-अंकुर (जयपुर)
भ्राता	:-	श्री नरेश चंद्र चतुर्वेदी (कानपुर), मनोज, अखिल (मैनपुरी)
भाभी	:-	श्रीमती विपला (इलाहाबाद)
भतीजे	:-	संतोष चंद्र, प्रवीण, दिलीप, अनुपम (लखनऊ), सुनीलचंद, संजय, अनीष (कानपुर), राजेश (कोलकाता) साहिल (दिल्ली)

वर्तमान पता : त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी, रेंज ऑफिस के पास, दतिया, (म. प्र.)
फोन नंबर 9425766590, 7974320313, 07999867085

– र.क्र. : 391

समाज समाचार

* सौ. निकिता व चि. प्रतीक सुपुत्र श्रीमती अमिता – श्री राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी,अन्नी (चंद्रपुर/प्रयाग) के विवाह की प्रथम वर्षगाँठ के शुभ अवसर पर अन्नी जी ने चंद्रिका सहायतार्थ 2100/– प्रदान किये। हार्दिक बधाई। – र.क्र. : 393

* विश्वास चतुर्वेदी सुपुत्र श्रीमती ज्योति– श्री विवेक चतुर्वेदी (फरौली/ गुरुग्राम) ने सीबीएसई की इंटरमीडिएट परीक्षा 2020 में 90.8 प्रतिशत अंक अर्जित किये। बधाई।

* श्री प्रभात कुमार जी (मैनपुरी/ कोटा/ बैंगलोर) ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती रेखा चतुर्वेदी की चतुर्थ पुण्य स्मृति में अन्नपूर्णा सहायतार्थ रुपये 12000/– प्रदान किये। (र.क्र.395)

* श्री जयंत चतुर्वेदी (इटावा/लखनऊ) ने अपने पुत्र चिरंजीव निशांत के महानगर, लखनऊ में नवीन निजगृह के गृह प्रवेश के अवसर पर अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ 12000/– रुपये प्रदान किए। बधाई। **र. क्र.394**

शाखा समाचार

कानपुर

श्री माथुर चतुर्वेदी सभा, कानपुर का होली मिलन समारोह 15 मार्च 2020 को प्रस्तावित था, परंतु कोरोना महामारी के कारण लॉकडाउन को दृष्टिगत रखते हुए शासन के निर्देशानुसार उक्त होली मिलन समारोह स्थगित कर दिया गया था। फिर भी इस महामारी के काल में श्री माथुर चतुर्वेदी सभा कानपुर द्वारा समाज के जरूरतमंद लोगों को आर्थिक सहायता प्रदान की गई तथा सर्व समाज के जरूरतमंद लोगों को कई दिनों तक भोजन वितरण किया गया। कानपुर सभा के द्वारा मुख्यमंत्री सहायता कोष में रुपए 51 हजार की चेक सहायतार्थ आयुक्त कानपुर मंडल को प्रदान की गई। उक्त कार्यक्रमों के लिए समाज के बंधुओं एवं अन्य समाज के लोगों द्वारा भी आर्थिक मदद की गई कार्यकारिणी के सभी सदस्यों का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। कानपुर सभा के द्वारा कानपुर के बंधुओं के चिकित्सा सहायता के लिए चिकित्सक प्रकोष्ठ का गठन भी किया गया है, हालांकि इसका गठन कानपुर समाज के बंधुओं के लिए ही किया गया था परंतु समाज के जरूरतमंद बाहरी बांधव की भी मदद की गई। कोबिड महामारी में थोड़ी कमी आने पर 12 अक्टूबर 2020 को श्री माथुर चतुर्वेदी सभा कानपुर की बैठक बाबू ओंकारनाथ चतुर्वेदी धर्मशाला कानपुर में की गई। श्री माथुर चतुर्वेदी सभा कानपुर की कार्यकारिणी की बैठक 1 नवंबर 2020 को बाबू ओंकार नाथ चतुर्वेदी धर्मशाला में की गई। जिसमें अन्य बिंदुओं के अलावा नवगठित कार्यकारिणी महासभा की प्रथम बैठक विगत की भांति कानपुर में कराने की सहमति प्राप्त हुई। तत्पश्चात सभापति श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा को कार्यकारिणी के निर्णय से अवगत करा दिया गया है तथा महासभा की कार्यकारिणी की प्रथम बैठक दिनांक 27 दिसंबर 2020 को करने की सहमति भी श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा से प्राप्त हो गई है।

प्रवेश चतुर्वेदी, महामंत्री

दिल्ली

श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा दिल्ली के तत्वावधान में आयोजित ऑनलाइन सांस्कृतिक संध्या, दीपोत्सव का आयोजन दिनांक 08–11–20 को सायं 6 बजे से किया गया। नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री महेश चंद्र चतुर्वेदी,बिजकौली ने दीप प्रज्वलित कर के कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। श्री आराध्य चतुर्वेदी द्वारा प्रस्तुत स्वस्ति वाचन से कार्यक्रम आरम्भ हुआ। आपने शुद्ध संस्कृत में सुमधुर प्रस्तुति कर सभी का मन मोह लिया। फिर अनीता जी, उषा जी, पल्लवी जी, सुजाता जी, विभा जी , रचना जी ने समूह स्तुति में भजन प्रस्तुति की। आगे अपने आशीष वचन में सुधीर जी नॉएडा ने इस नवगठित शाखा सभा के उज्वल भविष्य की कामना करते हुए महेश जी को बधाई दी। साथ ही उन्होंने अपनी तरफ से बच्चों के प्रोत्साहन के 3000/– के पुरुस्कार की घोषणा की। इसके बाद नीरजा जी ने अपने उद्बोधन में बताया कि वे इस सभा के गठन से हर्षित हैं और इस प्रकार की संस्थाओं की आवश्यकता को रेखांकित किया। साथ ही वे बोलीं कि हमारे समाज में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है। माता पिता को चाहिए कि वे बच्चों को प्रोत्साहित करके समाज के सामने लाएं। आगे संतोष जी ने बताया की काफी समय के बाद इस तरह के प्रोग्राम हो रहे हैं। जिससे बालकों को प्रोत्साहन मिलेगा और समाजको एक गति प्राप्त होगी। इसके बाद श्री मुनींद्र नाथ जी, सचिव श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा ने इस नयी शाखा सभा को बधाई देते हुए बताया कि दिल्ली शाखा सभा अपना पहला ऑनलाइन प्रोग्राम करने जा रही है जिसमें बच्चे अपनी हुनर समाज के सामने ला सकेंगे। विशेषकर उन्होंने महेश जी को दिल्ली में चतुर्वेदी समाज के सांस्कृतिक आयोजनों को पुनर्जीवित करने में जो पहल की है उसके लिए साधुवाद किया। विष्णु कान्त जी संरक्षक, महासभा ने कार्यक्रम को शुभकामना देते हुए कहा महेश जी के नेतृत्व में ये शाखा सभा सभी बांधवों को साथ लाने में सफल रहेंगी। उन्होंने सुझाव दिया कि हमें अपनी परम्परों को जीवित रखना है और अपनी अगली पीढ़ी को परपंराओं के विषय में बताना है। इस सभा के उज्वल भविष्य के लिए माता महाविद्या से प्रार्थना की कि हमारे समाज को आगे ले जाएँ। कमलेश पांडेय जी, संरक्षक महासभा ने शाखा सभा के गठन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए बताया की ये सभा का गठन इस समय की मांग है जबकि जीवन में नीरसता का प्रसार हो रहा है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि महेशजी के लम्बे सार्वजिनक जीवन के अनुभव से ये सभा लाभान्वित होगी। इसके बाद श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा सभापति डॉ. प्रदीप

चतुर्वेदी ने दिल्ली के सभी निवासियों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनायें देकर अपना वक्तव्य आरम्भ किया। उन्होंने कहा दिल्ली में काफी समय से सामाजिक गतिविधियां धीमी हो गयी थी। इस सन्दर्भ में सभी को लग रहा था। इस स्थिति को सुधरने के लिए कुछ प्रयास किया जाना चाहिए। उन्होंने श्री महेशजी की इस पहल का स्वागत किया। उन्होंने सूचना दी की श्री त्रिभुवन चतुर्वेदी जी जिन्होंने इस कार्यक्रम में सम्मिलित होना था। किसी कारणवश नहीं आ पा रहे हैं। उनकी ओर से सभी प्रतिभागियों एवं महेश जी को शुभकामना सन्देश दिया। अपने अध्यक्षीय भाषण में महेश जी समस्त दिल्ली चतुर्वेदी समाज को दीपावली की शुभकामनाएँ दी। उन्होंने इस नवगठित शाखा सभा की और से सभी का स्वागत करते हुए बताया कि दिल्ली से उनका जुड़ाव सन 1947 से है। उन्हें समाज की सेवा करने के संस्कार अपने पिता स्व. छक्कनलाल जी से मिले जो दिल्ली सभा के अध्यक्ष थे। आपने बताया उनकी रूचि युवाओं को प्रतिभा प्रदर्शन के अवसर देने में रही है। वे महासभा के कोषाध्यक्ष के रूप में समाज को अपनी सेवाएं देते रहे हैं। दिल्ली के युवा खिलाड़ियों की टीम लेकर भी कई बार फिरोज़ाबाद के टूर्नामेंट में गए है। उन्होने बताया दिल्ली चतुर्वेदी समाज की गतिविधियां पिछले कई दिनों से लगभग बंद सी हो गयी थी। कई बार बांधवों द्वारा मिलने जुलने के अवसरों की आवश्यकता व्यक्त की थी। आपसी मेल जोल के अवसर प्रदान करना हमारा दायित्व है। उन्होंने कहा यहाँ खेल कूद के कार्यक्रमों की भी अपार संभावना हैं। कमी थी तो केवल एक मंच की जहाँ युवक युवती आगे आ कर अपना कौशल समाज के सामने प्रस्तुत कर सकें। उन्होंने कहा कि महासभा के कई रचनात्मक कार्यक्रमों के दिल्ली में विस्तार की आवश्यकता है। जिसे वे पूरा करेंगे। कार्यक्रम की पहली प्रस्तुति में विभा जी ने आकर्षक नृत्य प्रस्तुत किया। फिर राशि जी, संजय जी, श्रीमति अनु जी, मीता जी ने मधुर प्रस्तुति दी। दो नन्हे भाई बहन ईशा एवं आकाश ने भगवन श्री राम चंद्र का एक सुंदर भजन प्रस्तुत किया। वैभवी जी ने एक आकर्षक नृत्य की प्रस्तुति की। मीता जी ने भजन गाया। बालक अबीर ने भगवन राम का भजन प्रस्तुत किया। हिमांगी ने आकर्षक नृत्य प्रस्तुत किया। पल्लवी जी का गीत भी सबको बहुत पसंद आया। विधि के नृत्य ने सभी का दिल जीत लिया। अचला जी का भजन ,पूजा जी एवं अंशिका जी की नृत्य, शिवानी जी की रचना, प्रीति जी द्वारा प्रस्तुत शिव स्तुति की सभी ने प्रशंसा की। कार्यक्रम की मनोहर प्रस्तुति एवं संचालन मनीष जी (होलीपुरा) ने बहुत ही मंजे हुए ढंग से की। मनीष जी ने बताया की लगभग ६५० से अधिक परिवार लॉगिन हो कर इस कार्यक्रम का आनद उठा रहे हैं जो कि एक बड़ी उपलब्धि है। बाद में श्री महेश जी ने अपनी कार्यकारिणी से अवगत कराया जो इस प्रकार है - संरक्षक-नीरजा जी, संतोष जी, अश्विनी जी, अध्यक्ष- महेश चंद्र चतुर्वेदी, उपाध्यक्ष- कौशल चतुर्वेदी जी,जनकपुरी, सचिव - लोकेन्द्र नाथ जी (फरौली), संयुक्त सचिव- सुधांशु जी पड़पडगंज, कोषाध्यक्ष - पल्लवी जी, कार्यकारिणी - मनीष जी जनकपुरी, धवल जी, पालम, पवित्र जी, मयूर विहार, शिशिर जी, द्वारका, योगेश जी, पटपड़ गंज, आनंद जी,मयूर विहार, दिवाकर जी, दिलशाद गार्डन ,अतुल जी, पटपड़गंज, मयंक जी, शाहदरा, पंकज जी गुडगाँव, अभिषेक जी, दरियागंज।

- लोकेन्द्र नाथ चतुर्वेदी, सचिव

लखनऊ : स्मरण करते हुए बहुप्रतीक्षित मंडल की जूम मीटिंग रविवार दिनांक 20 सितंबर 2020 को लगभग 6 माह बाद संपन्न हुई जिसमें हम लगभग 23 सदस्यों ने भागीदारी की जिसमें सर्वप्रथम मंत्री शिशिर जी ने मंडल की पिछली गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी उपलब्ध कराई तदोपरांत कोषाध्यक्ष श्रीमती पूनम जी ने बताया कि कोरोना वायरस के साथ ही कुछ पारिवारिक समस्याओं के कारण बैलेंस शीट तैयार नहीं हो सकी है। अति शीघ्र उसको तैयार कर कार्यकारिणी में प्रस्तुत कर पास करा लिया जाएगा। अध्यक्ष लेखेन्द्र जी पुत्तन ने बताया कि नवनिर्मित डायरेक्टरी की वेबसाइट बनाने की प्रक्रिया चल रही है जिसको पूर्ण कर शीघ्र ही इसका विमोचन कर समाज के सामने प्रस्तुत कर दिया जाएगा। इसी के साथ मंत्री ने एक चिकित्सा कोष बनाने के संबंध में बात रखी लेकिन उसको अगली बैठक में विचार-विमर्श हेतु कहा गया, इसी बैठक में एक प्रस्ताव यदुवेश जी का आया जिसमें उन्होंने नये भवन को खरीदने या जमीन खरीदने का प्रस्ताव समाज हित में रखा जिस पर अध्यक्ष पुत्तन जी ने कहा कि इस पर विचार अवश्य किया जा सकता है। परंतु स्थान और अपना बजट देखने के उपरांत इस हेतु उन्होंने श्री सुबोध जी के नेतृत्व में एक कमेटी का गठन किया जो इस पर अपनी रिपोर्ट जमीन देख कर देगी। अंत में सभी ने इस वर्चुअल मीटिंग हेतु श्री जलज जी और उनके सुपुत्र उज्जवल को इस सफल जूम मीटिंग के आयोजन के लिए दिल से साधुवाद और धन्यवाद ज्ञापित किया।

-लेखेन्द्र नाथ "पुत्तन", अध्यक्ष

निवेदन

नवीन परिपाटी के अनुरूप अब चतुर्वेदी चंद्रिका प्राप्त न होने की शिकायत अब ऑनलाइन महासभा की वेबसाइट www.chaturvedimahasabha.in पर दर्ज की जाएगी। पत्रिका के वितरण की शिकायत के यथाशीघ्र त्वरित निवारण हेतु समाज के समाजप्रेमी स्वयंसेवको से इस कार्य में सहयोग हेतु निवेदन किया गया। उनकी त्वरित सहमति उनके निस्वार्थ समाजप्रेम को परिलक्षित करता है। प्रारंभ में ये प्रणाली कुछ बाँधवों के सहयोग से निम्न शहरों में आरंभ कर रहे है। जिनके नाम निम्नानुसार है : मुनीन्द्र नाथ जी (नोएडा), भरत चतुर्वेदी (रिषड़ा/कोलकाता), दिलीप सिकंदरपुरिया जी (लखनऊ), आशुतोष जी (कानपुर), प्रदीप चतुर्वेदी,संजू (गाजियाबाद), करुणेश जी (ग्वालियर), अंशुमान जी (जयपुर), प्रदीप चतुर्वेदी,लालन (आगरा), अभयराज जी (गुरुग्राम)। इसके अलावा अन्य शहरों की सभाओं व सामाजिक कार्यकर्ताओं से चर्चा की जा रही है। यथाशीघ्र ही इस व्यवस्था को नियमित करने का प्रयास किया जा रहा है। **- संपादक**

शोक समाचार

* श्री धर्मेन्द्र चतुर्वेदी, भइयोला (पिनाहट/लखनऊ) का असामयिक स्वर्गवास दिनाँक 26 अक्टूबर 2020 को 50 वर्ष की आयु में लखनऊ हो गया।

--

* श्रीमती हेमलता चतुर्वेदी पत्नी श्री गिरीश जी चतुर्वेदी (अलीगढ़ रामपुरा, टोंक) का स्वर्गवास दिनाँक 27 अक्टूबर 2020 को हो गया।

--

* श्रीमती सरला चतुर्वेदी पत्नी स्व. चंद्रकांत चतुर्वेदी (होलीपुरा/कानपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 30 अक्टूबर 2020 को कानपुर में हो गया।

--

* श्रीमती स्वर्णलता चतुर्वेदी पत्नी स्व. डॉ. दिनेन्द्रभान चतुर्वेदी (चन्दवार, फिरोजाबाद /जयपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 02.11.2020 को जयपुर में हो गया।

--

* श्री जगदीश चतुर्वेदी (पचघरा, तरसोखर/ग्वालियर) का स्वर्गवास दिनाँक 07.10.20 को 74 वर्ष की आयु में हो गया।

--

* श्री प्रभाकर चतुर्वेदी (कमतरी/लखनऊ) का स्वर्गवास दिनाँक 09.11.20 को लखनऊ में हो गया।

--

* श्रीमती सोमवती चतुर्वेदी पत्नी श्री फणीन्द्र नाथ चतुर्वेदी (तरसोखर/ग्वालियर/कलकत्ता) का स्वर्गवास ग्वालियर में दिनाँक 09.11.20 को हो गया।

--

* श्री निशंक चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. नित्यानंद चतुर्वेदी (फिरोजाबाद) का स्वर्गवास दिनाँक 10.11.2020 को लगभग 60 वर्ष की आयु में दिल्ली में हो गया।

--

* श्रीमती प्रभावती चतुर्वेदी पत्नी श्री अनिल कुमार चतुर्वेदी का स्वर्गवास दिनाँक 10.11.20 को अलवर,राज. में हो गया।

--

* श्री ललित किशोर चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. श्री नवल किशोर चतुर्वेदी (अलीगढ– रामपुरा राज./ जयपुर) का दिनांक 06.11.2020 को स्वर्गवास हो गया।

--

* श्री हजारी लाल जी सुपुत्र स्व. जादो राय चतुर्वेदी (होलीपुरा/कोलकाता/बंगलोर) का लगभग 87 वर्ष की उम्र में अपने पुत्र नवीन जी के पास बंगलोर में निधन हो गया।

--

* श्रीमती कुमुद चतुर्वेदी पत्नी स्व. श्री रविन्द्र नाथ चतुर्वेदी (चंद्रपुर/भोपाल) का स्वर्गवास दिनाँक 15 नवंबर 2020 को भोपाल में हो गया।

--

* श्री उमाकान्त चतुर्वेदी सुपुत्र स्व.श्री जमना लाल चतुर्वेदी (झालरापाटन, झालावाड़) का स्वर्गवास दिनाँक 17.11.2020 को जयपुर में हो गया।

--

* श्रीमती जमुना देवी पत्नी स्व. श्री भानुदत्त चतुर्वेदी (सिकंदरपुर/कानपुर) का स्वर्गवास 90 वर्ष की आयु में दिनाँक 21.11.20 को हो गया।

--

* श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी धर्मपत्नी श्री गोपाल किन्कर चतुर्वेदी,मिम्मी (चन्द्रपुर/आगरा) का स्वर्गवास दिनाँक 21.11.20 को हो गया।

--

* श्रीमती उर्वशी चतुर्वेदी पत्नी स्व० श्री हृदय कुमार चतुर्वेदी (कमतरी/कानपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 23.11.2020 को लगभग 80 वर्ष की आयु में कानपुर में हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।